



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-11032024-252835
CG-DL-E-11032024-252835

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 157]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, मार्च 7, 2024/फाल्गुन 17, 1945

No. 157]

NEW DELHI, THURSDAY, MARCH 7, 2024/PHALGUNA 17, 1945

आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान

अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 फरवरी, 2024

एफ. नं. एल/12015/25/2021-एएस(III).—आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान अधिनियम, 2020 (2020 का 16) की धारा 28 की उप-धारा (1) के अनुच्छेद (ट) और धारा 13 के अनुच्छेद (च) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान, केंद्र सरकार के पूर्वानुमोदन से, निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात्: -

1. संक्षिप्त शीर्षक और प्रारंभ- (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान, स्नातकोत्तर-फार्मेसी नियम, 2024 है।

(2) ये राजपत्र में उनके प्रकाशन की तारीख से प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएँ- (1) इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो-

(क) "अधिनियम" का अर्थ है आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान अधिनियम, 2020 (2020 का 16);

(ख) "आवेदक" का अर्थ उस व्यक्ति से है जो निर्धारित आवेदन पत्र में संस्थान के आयुर्वेद के स्नातकोत्तर-फार्मेसी डिग्री कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए आवेदन करता है;

(ग) "सह-मार्गदर्शक" या "सह-पर्यवेक्षक" का अर्थ जहां कहीं भी आवश्यक हो, एक अतिरिक्त मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक से है, जिसे स्कॉलर के अनुसंधान कार्य की निगरानी या मार्गदर्शन करने के लिए विभागीय अनुसंधान समिति द्वारा अनुमोदित किया गया है और सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक संस्थान के पूर्णकालिक फैकल्टी हो सकते हैं अथवा नहीं भी।

(घ) "सह-प्रधान अन्वेषक" का अर्थ जहां कहीं भी आवश्यक हो, एक अतिरिक्त अन्वेषक से है, जिसे संस्थागत अनुसंधान समिति द्वारा अनुसंधान परियोजना के लिए प्रधान अन्वेषक की सहायता के लिए अनुमोदित किया गया हो और वह संस्थान का पूर्णकालिक फैकल्टी भी हो भी सकता है और नहीं भी।

(ङ) "परीक्षा नियंत्रक" का अर्थ संस्थान के सक्षम प्राधिकारी द्वारा नियुक्त परीक्षा नियंत्रक से है;

(च) "गाइड" या "पर्यवेक्षक" का अर्थ संस्थान की पूर्णकालिक फैकल्टी से है जिसे अकादमिक परिषद द्वारा शोध स्कॉलर के शोध कार्य का मार्गदर्शन या पर्यवेक्षण करने के लिए अनुमोदित किया गया है;

(छ) "प्रधान अन्वेषक" का अर्थ संस्थान द्वारा अनुसंधान परियोजना के लिए नामित व्यक्ति से है, जो परियोजना के निष्पादन के दौरान परियोजना से संबंधित मामलों और बौद्धिक संपदा के सृजन के संबंध में संस्थागत अनुसंधान समिति के साथ संवाद करता है।

(ज) "स्कॉलर" का अर्थ उस व्यक्ति से है जिसे स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में प्रवेश दिया गया है और जो इन नियमों का अनुपालन करता है;

(झ) "शिक्षक" का अर्थ है नियमित आधार पर संस्थान में लेक्चरर या सहायक प्रोफेसर, रीडर या सह-प्राध्यापक, प्राध्यापक, फार्माकोलॉजिस्ट, फार्मास्युटिकल केमिस्ट, फार्माकोग्नोसिस्ट, बायोकेमिस्ट और माइक्रोबायोलॉजिस्ट के रूप में नियुक्त किया गया व्यक्ति,

(2) यहां प्रयुक्त और परिभाषित नहीं किए गए लेकिन अधिनियम में परिभाषित शब्दों और अभिव्यक्तियों का वही अर्थ होगा जो उन्हें अधिनियम में दिया गया है।

3. प्रवेश समिति- (1) एक प्रवेश समिति होगी जिसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे, अर्थात्:-

संस्थान की प्रवेश समिति		
1.	निदेशक	अध्यक्ष;
2.	उपनिदेशक (फार्मसी)	सदस्य;
3.	डीन(शैक्षणिक)	सदस्य;
4.	प्रयोगशालाओं के प्रमुख (फार्माकोलॉजी, फार्मास्युटिकल रसायन विज्ञान, फार्माकोग्नॉसी की प्रयोगशाला)।	सदस्य; और
5.	विभागाध्यक्ष (रसशास्त्र एवं भैषज्यकल्पना एवं द्रव्यगुण विभाग)	सदस्य

(2) प्रवेश समिति इन नियमों के अनुसार परामर्श, साक्षात्कार और प्रवेश प्रक्रिया के संचालन के लिए उत्तरदायी होगी और प्रवेश प्रक्रिया का संचालन करने के लिए प्रत्येक वर्ष संस्थान के निदेशक द्वारा प्रवेश समिति का गठन किया जाएगा।

(3) बैठक का कोरम पूरा करने के लिए न्यूनतम पचास प्रतिशत सदस्यों की आवश्यकता होती है।

4. संस्थागत अनुसंधान समिति- (1) एक संस्थागत अनुसंधान समिति होगी जिसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे, अर्थात्:-

संस्थान की संस्थागत अनुसंधान समिति		
1.	निदेशक	अध्यक्ष;
2.	उपनिदेशक (स्नातकोत्तर)	सदस्य;
3.	उपनिदेशक (फार्मसी)	सदस्य;
4.	डीन(शैक्षणिक)	सदस्य;
5.	सदस्य-सचिव, संस्थागत आचार समिति	सदस्य;
6.	सदस्य-सचिव, संस्थागत पशु आचार समिति	सदस्य;
7.	जैवसांख्यिकीविद्	सदस्य;
8.	अध्यक्ष द्वारा रोटेशन के आधार पर नामित बायोकेमिस्ट्री या पैथोलॉजी या माइक्रोबायोलॉजी प्रमुख	सदस्य;

9.	अध्यक्ष द्वारा रोटेशन के आधार पर नामित फार्माकोलॉजी या फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री या फार्माकोग्रांसी प्रमुख	सदस्य;
10.	अध्यक्ष द्वारा रोटेशन के आधार पर नामित शिक्षण विभागों के तीन प्रमुख	सदस्य;
11.	संस्थान के लेखा अनुभाग का प्रमुख	सदस्य;
12.	निदेशक द्वारा आवश्यकतानुसार नामित आमंत्रित बाहरी विशेषज्ञ	सदस्य; और
13.	डीन (अनुसंधान)	सदस्य-सचिव

(2) संस्थागत अनुसंधान समिति का गठन निदेशक द्वारा तीन वर्ष की अवधि के लिए डीन (अनुसंधान) की अनुशंसा पर किया जाएगा।

(3) सिफारिशें करते समय, संस्थागत अनुसंधान समिति यह सुनिश्चित करेगी कि सिफारिशें इन विनियमों के अनुरूप की गई हैं।

(4) संस्थागत अनुसंधान समिति के पास निम्नलिखित शक्तियां और कार्य होंगे, अर्थात्: -

(क) संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों की समीक्षा और निगरानी करना;

(ख) अनुसंधान प्रस्तावों और अन्य अनुसंधान परियोजना से संबंधित मामलों की समीक्षा और अनुमोदन करना;

(ग) विभागीय अनुसंधान समिति की सिफारिशों की जांच करना और उचित निर्णय लेना;

(घ) प्रस्तावित प्रायोजित अनुसंधान कार्य या परियोजना की प्रकृति, उद्देश्य, गुणवत्ता और व्यवहार्यता निर्धारित करने के लिए प्रायोजक एजेंसियों के आवेदनों की जांच करना और यदि कोई हो तो उसे मंजूरी देना और आवश्यक सिफारिशें करना;

(ङ) प्रस्तावित प्रायोजित अनुसंधान कार्य या परियोजना के लिए प्रधान अन्वेषक की नियुक्ति करना;

(च) सह-प्रधान अन्वेषक, यदि कोई हो, को प्राथमिकता देकर विशेष परिस्थितियों में अनुसंधान परियोजनाओं के प्रधान अन्वेषक से बदलना;

(छ) किसी भी प्रतिष्ठित संगठन या एजेंसियों के साथ समझौता ज्ञापन की समीक्षा और अनुशंसा करना।

(5) संस्थागत अनुसंधान समिति वर्ष में त्रैमासिक या कम से कम दो बार बैठक करेगी:

बशर्ते कि, संस्थागत अनुसंधान समिति के अध्यक्ष अनुसंधान संबंधी गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए किसी भी समय बैठक बुलाएंगे।

(6) संस्थागत अनुसंधान समिति की प्रत्येक बैठक के बाद सदस्य-सचिव बैठक का कार्यवृत्त तैयार करेगा और सदस्यों के बीच वितरण के बाद अध्यक्ष के अनुमोदन से सदस्य-सचिव द्वारा हस्ताक्षरित किया जाएगा और कार्यवृत्त की प्रति निदेशक और परीक्षा नियंत्रक तथा अन्य संबंधितों को भेजी जाएगी।

(7) बैठक का कोरम पूरा करने के लिए न्यूनतम पचास प्रतिशत सदस्यों की आवश्यकता होती है।

5. विभागीय अनुसंधान समिति- (1) निदेशक द्वारा फार्मैसी के प्रत्येक विभाग के लिए एक विभागीय अनुसंधान समिति का गठन किया जाएगा।

(2) विभागों के पूर्ण विकास के बाद संस्थान द्वारा प्रत्येक विभाग की विभागीय अनुसंधान समिति अलग से गठित की जाएगी और तब तक, वर्तमान विभागीय अनुसंधान समिति जारी रह सकती है।

(3) सामान्य विभागीय अनुसंधान समिति में न्यूनतम पांच सदस्य होंगे और कोरम पूरा करने के लिए न्यूनतम तीन सदस्यों की आवश्यकता होगी।

(4) पीएचडी डिग्री वाले नियमित फैकल्टी विभागीय अनुसंधान समिति के सदस्य होंगे और विभागीय अनुसंधान समिति में निम्नलिखित सदस्य होंगे: -

(क) मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) की विभागीय अनुसंधान समिति, -

1.	रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना के विभाग के प्रमुख	अध्यक्ष;
2.	द्रव्यगुण विभाग के प्रमुख	सदस्य;
3.	रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना विभाग से एक प्राध्यापक या सह-प्राध्यापक	सदस्य; और
4.	फार्माकोलॉजी, फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री और फार्माकोग्रांसी विभाग के प्रमुख	सदस्य

(ख) मास्टर ऑफ साइंस (मेडीसिनल प्लांट्स) की विभागीय अनुसंधान समिति -

1.	द्रव्यगुण विभाग का प्रमुख	अध्यक्ष;
2.	रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना विभाग के प्रमुख	सदस्य;
3.	द्रव्यगुण विभाग से एक प्रोफेसर या सह-प्राध्यापक	सदस्य; और
4.	फार्माकोलॉजी, फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री और फार्माकोग्रांसी विभाग के प्रमुख	सदस्य

(5) विभागीय अनुसंधान समिति अपने एक सदस्य को सदस्य सचिव नियुक्त करेगी।

(6) डीन (अनुसंधान) को किसी भी विभागीय अनुसंधान समिति की बैठक में भाग लेने का अधिकार दिया गया है और उसे विशेष बैठक का सदस्य माना जाएगा।

(7) अध्यक्ष प्राध्यापक के श्रेणी का होगा और उसकी अनुपलब्धता की स्थिति में निदेशक सामान्य विभागीय अनुसंधान समिति के सदस्यों में से किसी एक उपर्युक्त व्यक्ति को अध्यक्ष के रूप में नियुक्त कर सकता है।

(8) विभागीय अनुसंधान समिति के अध्यक्ष के पास संस्थान के कर्मचारियों में से ऐसे सदस्यों को अस्थायी सदस्य के रूप में चुनने का अधिकार होगा जो उनके विचार-विमर्श में सहायक हो सकता है।

(9) संबंधित मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक या सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक को केवल उनके पर्यवेक्षण के तहत स्कॉलरों की प्रस्तुति के दौरान विभागीय अनुसंधान समिति की बैठक में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

(10) विभागीय अनुसंधान समिति आवश्यकता पड़ने पर या कम से कम त्रैमासिक बैठक करेगी।

(11) विभागीय अनुसंधान समिति के पास निम्नलिखित शक्तियां और कार्य होंगे, अर्थात्: -

(क) अनुसंधान के उस क्षेत्र को मंजूरी देना जिसमें स्कॉलरों को अनुसंधान करने की सिफारिश की जाएगी;

(ख) यदि आवश्यक हो, तो औचित्य के साथ मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक को बदलने की सिफारिश करना; और

(ग) शोध कार्यों की प्रगति रिपोर्ट का मूल्यांकन करना और शोध कार्य से संबंधित अन्य सभी मुद्दों पर चर्चा करना।

(12) विभागीय अनुसंधान समिति की प्रत्येक बैठक के बाद विभागीय अनुसंधान समिति का सदस्य-सचिव बैठक का कार्यवृत्त तैयार करेगा और सदस्यों के बीच वितरण करने के बाद, उस पर सदस्य-सचिव और विभागीय अनुसंधान समिति के अध्यक्ष द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे।

(13) कार्यवृत्त की एक प्रति डीन (शैक्षणिक) और डीन (अनुसंधान) को भेजी जाएगी।

(14) विभागीय अनुसंधान समिति में किसी भी विवाद की स्थिति में, मामला संस्थागत अनुसंधान समिति को भेजा जाएगा, जिसका निर्णय अंतिम और बाध्यकारी होगा।

6. स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में उपलब्ध विशेषज्ञताएं:- (1) संस्थान नियम 6 के उप-नियम (2) के भाग (क) और (ख) में किए गए उल्लेख के अनुसार विभिन्न विशेषज्ञताओं में स्नातकोत्तर डिग्री प्रदान करेगा।

(2) निम्नलिखित विशेषज्ञता और विभागों में स्नातकोत्तर डिग्री की अनुमति दी जाएगी, अर्थात्:-

(क) तालिका के कॉलम (4) में उल्लिखित मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) उपाधि कार्यक्रम को तालिका के कॉलम (2) और

(3) में उल्लिखित विशेषज्ञता और विभाग में अनुमति दी जाएगी-

तालिका

क्र. सं.	विशेषज्ञता का नाम	विभाग जिसमें फार्मेसी-स्नातकोत्तर उपाधि संचालित की जानी है	कार्यक्रम और विशेषज्ञता पूरा करने के बाद प्रदान की जाने वाली उपाधि
(1)	(2)	(3)	(4)
1.	रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना	रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना विभाग	एम. फार्म (आयुर्वेद)- रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना;
2.	द्रव्यगुण विज्ञान	द्रव्यगुण विभाग	एम. फार्म (आयुर्वेद)- द्रव्यगुण;
3.	फार्माकोलॉजी और टोक्सीकोलॉजी	फार्माकोलॉजी विभाग	एम. फार्म (आयुर्वेद)- फार्माकोलॉजी;
4.	फार्मास्युटिकल रसायन विज्ञान या एनालिटिकल रसायन विज्ञान	रसायन विभाग	एम. फार्म (आयुर्वेद)- फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री या एनालिटिकल केमिस्ट्री
5.	फार्माकोग्रांसी	फार्माकोग्रांसी विभाग	एम. फार्म (आयुर्वेद)- फार्माकोग्रांसी

(ख) तालिका के कॉलम (4) में उल्लिखित मास्टर ऑफ साइंस (मेडीसिनल प्लांट्स) डिग्री कार्यक्रम को तालिका के कॉलम

(2) और (3) में उल्लिखित विशेषज्ञता और विभाग में अनुमति दी जाएगी:-

तालिका

क्र. सं.	विशेषता का नाम	विभाग जिसमें मेडीसिनल प्लांट्स-स्नातकोत्तर उपाधि संचालित की जानी है	कार्यक्रम और विशेषज्ञता पूरा करने के बाद प्रदान की जाने वाली उपाधि
1.	आयुर्वेदिक ड्रग फार्म्यूलेशन	रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना विभाग	एम. एससी. (मेडीसिनल प्लांट्स)-भैषज्य कल्पना;
2.	मेडीसिनल प्लांट्स या नेचुरल प्रोडक्ट्स	द्रव्यगुण विभाग	एम.एससी.(मेडीसिनल प्लांट्स)-द्रव्यगुण;
3.	फार्माकोलॉजी और टोक्सीकोलॉजी	फार्माकोलॉजी विभाग	एम.एससी.(मेडीसिनल प्लांट्स)-फार्माकोलॉजी;
4.	फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री या एनालिटिकल केमिस्ट्री या फाइटोकेमिस्ट्री	रसायनिकी विभाग	एम. एससी. (मेडीसिनल प्लांट्स)- फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री या एनालिटिकल केमिस्ट्री या फाइटोकेमिस्ट्री;
5.	फार्माकोग्रांसी	फार्माकोग्रांसी विभाग	एम.एससी.(मेडीसिनल प्लांट्स)-फार्माकोग्रांसी;

6.	प्लांट्स बायोकेमिस्ट्री	जैव रसायन विभाग	एम.एससी.(मेडीसिनल प्लांट्स) - बायोकेमिस्ट्री; और
7.	प्लांट्स माइक्रोबायोलॉजी	माइक्रोबायोलॉजी विभाग	एम.एससी.(मेडीसिनल प्लांट्स) - माइक्रोबायोलॉजी

7. स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम में प्रवेश के लिए पात्रता- (1) मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) उपाधि कार्यक्रम में प्रवेश के लिए, अभ्यर्थी किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से बी.फार्मा (आयुर्वेद) होना चाहिए।

(2) मास्टर ऑफ साइंसेज (मेडीसिनल प्लांट्स) उपाधि कार्यक्रम में प्रवेश के लिए, अभ्यर्थियों को विज्ञान (अध्ययन के एक विषय के रूप में वनस्पति विज्ञान- बोटनी) फार्मेसी, कृषि, आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी या इसके समकक्ष वैधानिक विश्वविद्यालय या केंद्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त वैधानिक निकाय द्वारा दी जाने वाली समतुल्य विषय में स्नातक उपाधि होनी चाहिए।

8. प्रवेश की तिथि- स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम में प्रवेश वर्ष में एक बार, अधिमानतः प्रत्येक कैलेंडर वर्ष के अगस्त-सितंबर के महीने में होगा।

9. प्रवेश का तरीका- (1) संस्थान की फार्मेसी की प्रवेश समिति प्रवेश प्रक्रिया का संचालन करेगी।

(2) प्रवेश समिति के अध्यक्ष प्रवेश प्रक्रिया से संबंधित गोपनीय कार्यों के लिए उप-समितियों की नियुक्ति करेंगे।

(3) मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) में प्रवेश के लिए, अभ्यर्थी को संस्थान द्वारा निर्धारित योग्यता मानदंडों के अनुसार स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी और इस उद्देश्य के लिए अभ्यर्थी को एक निर्धारित आवेदन पत्र में संस्थान द्वारा निर्धारित तिथि के भीतर और समय-समय पर घोषित शुल्क ऑनलाइन मोड के माध्यम से भुगतान करके आवेदन करना होगा, जो संस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध होगा।

(4) सौ अंकों की बहुविकल्पीय प्रश्नपत्र स्वरूप की लिखित प्रवेश परीक्षा होगी, जो बैचलर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) के पाठ्यक्रम पर आधारित होगी।

(5) प्रवेश परीक्षा की मेरिट केवल वर्तमान प्रवेश प्रक्रिया के लिए मान्य होगी और अगले वर्ष के लिए आगे नहीं बढ़ाई जाएगी।

(6) संस्थान की गठित समिति प्रत्येक श्रेणी के योग्य आवेदकों की प्रवेश परीक्षा के मेरिट स्कोर (अस्सी प्रतिशत वेटेज) और स्नातक उपाधि कार्यक्रम के अंतिम वर्ष के प्रतिशत (बीस प्रतिशत वेटेज) के आधार पर मेरिट सूची तैयार करेगी।

(7) मेरिट सूची के अनुसार अभ्यर्थियों को काउंसलिंग के लिए बुलाया जाएगा और प्रत्येक श्रेणी में काउंसलिंग के लिए बुलाए गए अभ्यर्थियों की संख्या सीटों की संख्या से दो गुना होगी।

(8) काउंसलिंग के लिए बुलाए गए अभ्यर्थी को संस्थान द्वारा निर्दिष्ट समय सीमा के भीतर सभी आवश्यक मूल दस्तावेजों के साथ उपस्थित होना होगा।

(9) मेरिट के क्रम में अभ्यर्थी अपनी संबंधित श्रेणी में सीटों की उपलब्धता के अनुसार अपनी पसंद की विशेषज्ञता का चयन करेंगे।

(10) मास्टर ऑफ साइंसेज (मेडीसिनल प्लांट्स) उपाधि कार्यक्रम में प्रवेश स्नातक उपाधि की योग्यता परीक्षा की मेरिट के आधार पर होगा।

(11) विदेश से प्रवेश चाहने वाले विदेशी नागरिक अभ्यर्थियों को अपने आवेदन आयुर्वेद शिक्षण और अनुसंधान संस्थान या भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (विदेशी नागरिकों के लिए आयुष छात्रवृत्ति का लाभ उठाने के लिए), भारत सरकार, नई दिल्ली के माध्यम से प्रस्तुत करने होंगे।

(12) विदेशी नागरिक अभ्यर्थियों को प्रवेश परीक्षा से छूट दी गई है और विदेशी अभ्यर्थी के लिए एक सीट पर प्रवेश अभ्यर्थी के मेरिट के आधार पर होगा।

(13) सभी चयनित अभ्यर्थियों मेडिकल फिटनेस के अधीन होंगे और जब तक उन्हें चिकित्सकीय रूप से फिट घोषित नहीं किया जाता तब तक उन्हें डिग्री कार्यक्रम में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

10. आरक्षण- (1) विभिन्न श्रेणियों (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और बेंचमार्क दिव्यांगता) के लिए आरक्षण, प्रवेश के समय भारत सरकार के कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग के दिशानिर्देशों के अनुरूप होगा।

(2) एक नॉन-स्टाइपेंडरी वाली सीट समतुल्य उपाधि वाले विदेशी नागरिक अभ्यर्थियों के लिए आरक्षित होगी और इन अभ्यर्थियों को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद से प्राप्त आवेदन के माध्यम से आयुष मंत्रालय द्वारा नामित किया जाएगा।

(3) यदि आरक्षित कोटे की सीटों में से कोई रिक्ति निकलती है, तो उसे केंद्र सरकार के लागू मानदंडों का सख्ती से पालन करते हुए भरा जाएगा।

11. स्टाइपेंड- (1) जिन स्कॉलरों को स्टाइपेंड सीटों पर प्रवेश दिया जाता है, उन्हें संस्थान द्वारा समय-समय पर अवधि जो दो वर्षों से अधिक की नहीं होगी, के लिए निर्धारित मासिक स्टाइपेंड का भुगतान किया जाएगा, बशर्ते कि उनकी उपस्थिति, मुख्य प्रशिक्षण, अनुसंधान प्रगति और आचरण संतोषजनक हो तथा प्रथम वर्ष की परीक्षा में असफल होने पर, स्टाइपेंड, परीक्षा उत्तीर्ण करने और अगले वर्ष पदोन्नति तक के लिए रोक दी जाएगी।

(2) सत्र के बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले स्कॉलरों को दो लाख रुपये बांड राशि के साथ स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में शामिल होने से लेकर स्कॉलर को भुगतान की गई स्टाइपेंड की पूरी राशि वापस करनी होगी।

(3) संस्थान के निदेशक ऐसे मामलों पर निर्णय लेने के लिए सक्षम प्राधिकारी होंगे और अध्ययन अवधि के दौरान किसी स्कॉलर की मृत्यु की स्थिति में, स्टाइपेंड की कोई वसूली नहीं की जाएगी।

12. बांड- (1) प्रत्येक चयनित अभ्यर्थी को अनुलग्नक के अनुसार निर्धारित प्रपत्र में स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में शामिल होने से पहले संस्थान के साथ बांड निष्पादित करना होगा।

(2) यदि छात्र बीच में ही कार्यक्रम छोड़ देता है, तो छात्र को संस्थान से रीलिव होने के लिए मुआवजे के रूप में संस्थान को अग्रिम भुगतान किए गए स्टाइपेंड के साथ दो लाख रुपये का अग्रिम भुगतान करना होगा।

13. डिग्री कार्यक्रम की अवधि और उपस्थिति- (1) स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम की अवधि दो वर्षों की होगी, जिसमें से पहला वर्ष सामान्य पाठ्यक्रम के लिए समर्पित होगा और अंतिम (दूसरा) वर्ष शोध प्रबंध या परियोजना कार्य के साथ विशेष पाठ्यक्रम के लिए समर्पित होगा।

(2) यदि छात्र किसी भी कारण से संस्थान के प्राधिकारी की उचित अनुमति के साथ उपाधि कार्यक्रम बीच में छोड़ देता है, तो उसे प्रवेश की तारीख से छह वर्ष की अधिकतम अवधि के भीतर उपाधि कार्यक्रम पूरा करने की अनुमति दी जाएगी।

(3) स्कॉलरों को परीक्षा में शामिल होने के लिए पात्र बनने के लिए कुल व्याख्यान और प्रैक्टिकल की कुल संख्या का अलग-अलग कम से कम पचहत्तर प्रतिशत उपस्थित होना आवश्यक होगा और इस उद्देश्य के लिए, उप निदेशक (फार्मैसी) की सिफारिश पर, निदेशक एक वर्ष में पांच प्रतिशत तक उपस्थिति की कमी को माफ करने के लिए सक्षम प्राधिकारी होगा।

(4) उप निदेशक (फार्मैसी) या निदेशक की पूर्व अनुमति के बिना स्कॉलर की लगातार तीस दिनों से अधिक अनुपस्थिति पर, स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में प्रवेश बिना किसी सूचना के स्वचालित रूप से समाप्त हो जाएगा।

(5) स्कॉलरों को डिग्री कार्यक्रम के दौरान फार्मैसी और उन्हें आवंटित अन्य कर्तव्यों में भाग लेना आवश्यक होगा।

(6) अंतिम (द्वितीय) वर्ष के स्कॉलरों को अध्ययन के दौरान शोध प्रबंध और अन्य शोध कार्य के लिए आवंटित विभाग में उपस्थित होना आवश्यक होगा।

(7) स्कॉलरों को विशेष व्याख्यान, प्रदर्शन, कार्यशाला, सेमिनार, प्रशिक्षण, अध्ययन दौरे और ऐसी अन्य गतिविधियों में भाग लेना आवश्यक होगा जो संस्थान द्वारा समय-समय पर आयोजित की जा सकती हैं।

(8) स्कॉलरों को अध्ययन अवधि के दौरान एक साथ किसी अन्य पूर्णकालिक डिग्री कार्यक्रम में शामिल होने की अनुमति नहीं दी जाएगी, लेकिन गाइड, विभाग के प्रमुख, उपनिदेशक (फार्मैसी) और संस्थान के निदेशक की अनुमति के बाद ही उन्हें सौंपे गए कर्तव्यों और अध्ययन में बाधा डाले बिना डिप्लोमा या प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम में शामिल होने की अनुमति दी जा सकती है।

(9) यदि स्कॉलर को डिग्री कार्यक्रम के कार्यकाल के दौरान किसी सरकारी निकाय में स्थायी नियुक्ति के लिए चुना जाता है, तो स्कॉलर सेवाओं को ज्वाइन कर सकता है और स्कॉलर संस्थान में ज्वाइन होने की तारीख से छह वर्ष की अवधि के भीतर नियोक्ता से उचित अनुमति प्राप्त करने के बाद डिग्री कार्यक्रम पूरा कर सकता है।

(10) यदि स्कॉलर सेवा में शामिल होने के एक वर्ष बाद संस्थान में शामिल होने की तारीख से छह वर्ष की अवधि के भीतर अध्ययन पूरा करने में विफल रहता है, तो प्रवेश रद्द माना जाएगा और यदि वह स्टाइपेंडरी सीटों पर है तो, विनियम 11 के उप-विनियम (3) के तहत स्टाइपेंड वापस देय होगा।

(11) अध्ययन में दोबारा शामिल होने के मामले में, स्कॉलर को प्रत्येक वर्ष में पचहत्तर प्रतिशत उपस्थिति के मानदंड को पूरा करना होगा और उसे अंतिम (द्वितीय) परीक्षा में उपस्थित होने से पहले शोध प्रबंध पूरा करना होगा और यदि स्कॉलर इन मानदंडों को पूरा करने में विफल रहता है, तो वह अंतिम (द्वितीय) वर्ष की परीक्षा में बैठने के लिए पात्र नहीं होगा।

14. प्रशिक्षण की पद्धति- (1) आयुर्वेदिक फार्मेसी या औषधीय पौधों या अनुसंधान में गहन प्रशिक्षण के साथ-साथ संबंधित विशेषज्ञता में तुलनात्मक और महत्वपूर्ण अध्ययन दिया जाएगा, जिसके लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण और प्रायोगिक पर बल दिया जाएगा।

(2) स्कॉलरों को अपनी-अपनी विशेषज्ञता में किए गए शोध कार्य की विधियों और तकनीकों के बारे में जानना आवश्यक है।

(3) स्कॉलरों को अपनी विशेषज्ञता या विषय में स्नातक छात्रों के शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना आवश्यक होगा।

(4) प्रशिक्षण का उद्देश्य स्कॉलर के ज्ञान को बढ़ाना और विशेषज्ञ के रूप में स्वतंत्र कार्य करना होगा।

(5) एक योजनाबद्ध कार्यक्रम पर संपूर्ण और गहन प्रशिक्षण स्कॉलरों को दिया जाएगा और ऐसे कार्यक्रम आवश्यक होने पर उप निदेशक (फार्मेसी) या निदेशक के निरीक्षण और जांच के लिए उपलब्ध कराये जायेंगे।

(6) डिग्री कार्यक्रम के दौरान शिक्षण प्रौद्योगिकी और अनुसंधान विधियों में पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

(7) अध्ययन दौरा शिक्षण और प्रशिक्षण का एक हिस्सा होगा और अध्ययन दौरा पूरी तरह से फार्मेसी या औषधीय पौधों या अनुसंधान से संबंधित स्थानों पर होगा और इसका उद्देश्य क्षेत्र की अतिरिक्त जानकारी और ज्ञान को जोड़ना होगा और अध्ययन दौरे में भारत में निम्नलिखित स्थानों का दौरा शामिल हो सकता है, अर्थात्: -

(क) आयुर्वेदिक उद्योग;

(ख) जड़ी-बूटियों या औषधीय पौधों के अवलोकन के लिए कोई वन या स्थान;

(ग) अनुसंधान केंद्र और प्रयोगशालाएं;

(घ) आयुर्वेद और फार्मेसी से संबंधित पुरातत्व स्थल; और

(च) प्रमुख राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थान।

(8) निर्देशों का माध्यम हिंदी, अंग्रेजी या संस्कृत में होगा।

15. परीक्षाएँ- (1) स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम में दो मुख्य परीक्षाएँ होंगी, जो कि प्रथम वर्ष की परीक्षा और अंतिम (द्वितीय) वर्ष की परीक्षा हैं।

(2) प्रथम वर्ष की परीक्षा प्रथम शैक्षणिक वर्ष के अंत में अध्ययन के प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित विषयों में आयोजित की जाएगी।

(3) अंतिम (द्वितीय) वर्ष की परीक्षा विशेषज्ञता के विषय से संबंधित शोध प्रबंध या परियोजना कार्य के साथ विशेष पाठ्यक्रम में अंतिम (द्वितीय) शैक्षणिक वर्ष के अंत में आयोजित की जाएगी।

(4) परीक्षा सामान्यतः जुलाई माह में होगी।

(5) प्रारंभिक और अंतिम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक सैद्धांतिक और प्रायोगिक (जिसमें प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा जहां भी लागू हो, शामिल हैं) में अलग-अलग पचास प्रतिशत होंगे, जैसा कि इन नियमों की अंक वितरण तालिका में निर्दिष्ट है और कोई ग्रेस अंक स्वीकार्य नहीं होगा।

(6) पैंसठ प्रतिशत और उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाला छात्र को विषय में प्रथम श्रेणी और पचहत्तर प्रतिशत और उससे अधिक अंको पर विषय में विशिष्टता प्रदान किए जाएंगे और ये पुरस्कार पूरक परीक्षाओं के लिए लागू नहीं होंगे।

16. प्रथम वर्ष की परीक्षा की योजना- (1) छह सैद्धांतिक पेपर होंगे, प्रत्येक तीन घंटे की अवधि और सौ अंकों का होगा, उसके बाद प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा होगी।

(2) प्रथम वर्ष के मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) के विषय, सैद्धांतिक अंक और प्रायोगिक अंक तथा वाइवा अंक नीचे दी गई तालिका में उल्लिखित हैं, अर्थात्:

तालिका

क्र.सं.	मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) प्रथम वर्ष के लिए विषयों का नाम	सैद्धांतिक अंक	प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा के अंक
01	रसशास्त्र एवं भैषज्य कल्पना-फार्मास्यूटिक्स	100	100
02	द्रव्यगुण विज्ञान- मटेरिया मेडिका	100	100
03	फार्माकोलॉजी और टॉक्सीकोलॉजी ऑफ आयुर्वेदिक ड्रग्स	100	100

04	फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री ऑफ आयुर्वेदिक ड्रग्स	100	100
05	फार्माकोग्नॉस्टिक आस्पेक्ट्स ऑफ आयुर्वेदिक ड्रग्स	100	100
06	आयुर्वेदिक दवाओं और फार्मेसी प्रयोग के नैदानिक और चिकित्सीय पहलू	100	--

(3) प्रथम वर्ष के मास्टर ऑफ साइंस (मेडीसिनल प्लांट्स) के विषय, सैद्धांतिक अंक और प्रायोगिक अंक तथा मौखिक अंक के विषय नीचे तालिका में उल्लिखित हैं, अर्थात्: -

तालिका

क्र.सं.	मास्टर ऑफ साइंसेज (मेडीसिनल प्लांट्स) के लिए विषयों का नाम - प्रथम वर्ष	सैद्धांतिक अंक	प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा के अंक
01	द्रव्यगुण विज्ञान- मटेरिया मेडिका	100	100
02	औषधीय पौधे और खेती तथा वृक्ष आयुर्वेद	100	100
03	फाइटोकैमिस्ट्री	100	100
04	वनस्पति विज्ञान और फार्माकोग्नॉसी	100	100
05	फार्माकोलॉजी और टॉक्सिकोलॉजी	100	100
06	प्लांट्स बायोकेमिस्ट्री और माइक्रोबायोलॉजी	100(50+50)	100

(4) ऊपर उल्लिखित विशेषज्ञताओं के प्रत्येक पेपर के लिए पाठ्यक्रम संबंधित विभाग द्वारा निर्धारित किया जाएगा और अकादमिक निकाय द्वारा अनुमोदित किया जाएगा तथा समय-समय पर संशोधित किया जाएगा।

(5) प्रथम वर्ष के एक विषय में अनुत्तीर्ण होने वाले छात्र को अंतिम (द्वितीय) वर्ष के सत्र को जारी रखने की अनुमति दी जाएगी, बशर्ते कि छात्रों को अंतिम (द्वितीय) वर्ष की परीक्षा में शामिल होने की अनुमति तब तक नहीं दी जाएगी जब तक छात्र प्रथम वर्ष की परीक्षा के सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो जाता।

(6) दो से अधिक विषयों में अनुत्तीर्ण होने वाले छात्र को अंतिम (द्वितीय) वर्ष में अपनी अवधि जारी रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

(7) प्रथम वर्ष की अगली पूरक परीक्षा प्रत्येक छह महीने में आयोजित की जाएगी और अधिकतम चार वर्षों की अवधि के भीतर प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अधिकतम चार परीक्षण (मुख्य परीक्षा सहित) दिए जाएंगे और अधिकतम सीमा के भीतर उत्तीर्ण होने की उसकी असमर्थता की स्थिति में छात्र को डिग्री कार्यक्रम आगे जारी रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

17. अंतिम (द्वितीय) वर्ष की परीक्षा की योजना- (1) स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, प्रत्येक स्कॉलर को अंतिम (द्वितीय) वर्ष में संबंधित विशेषज्ञता और पाठ्यक्रम से संबंधित विषय पर शोध-प्रबंध तैयार करना होगा।

(2) सभी स्कॉलर जो अंतिम (द्वितीय) वर्ष की परीक्षा में शामिल होना चाहते हैं, उन्हें संस्थान द्वारा निर्दिष्ट तिथि को या उससे पहले अनुमोदन के लिए शोध प्रबंध प्रस्तुत करना होगा।

(3) प्रत्येक सौ अंकों का सैद्धांतिक पेपर तीन घंटे की अवधि का होगा, उसके बाद सौ अंकों की प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा होगी।

(4) मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) के अंतिम (द्वितीय) वर्ष के विषय निम्नलिखित तालिका में उल्लिखित किए गए अनुसार होंगे, अर्थात्: -

तालिका

क्र.सं.	मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद) के लिए विषयों का नाम – अंतिम (दूसरा) वर्ष	सैद्धांतिक अंक	प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा के अंक
01	आयुर्वेदिक फार्मास्यूटिक्स	100	--
02	आयुर्वेदिक मटेरिया मेडिका	100	--
03	आयुर्वेदिक औषधि अनुसंधान में हालिया प्रगति	100	
04	रिसर्च मेथोडोलोजी एवं स्टेटिस्टिक्स	100 (60+40)	--
05	संबंधित विशेषज्ञता के लिए - प्रैक्टिकल और मौखिक परीक्षा	--	100
06	संबंधित विशेषज्ञता के लिए - शोध प्रबंध और मौखिक परीक्षा	--	100

(5) अंतिम (द्वितीय) वर्ष के मास्टर ऑफ साइंसेज (मेडीसिनल प्लांट्स) के विषय निम्नलिखित तालिका में उल्लिखित किए गए अनुसार होंगे, अर्थात्:-

तालिका

क्र.सं.	मास्टर ऑफ साइंसेज (मेडीसिनल प्लांट्स) के लिए विषयों का नाम- अंतिम (दूसरा) वर्ष	सैद्धांतिक अंक	प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा के अंक
01	आयुर्वेदिक ड्रग फॉर्म्यूलेशन	100	--
02	मिडिसिनल प्लांट्स एवं कल्टिवेशन	100	--
03	आयुर्वेदिक औषधि अनुसंधान में हालिया प्रगति	100	--
04	रिसर्च मेथोडोलोजी एवं स्टेटिस्टिक्स	100 (60+40)	--
05	संबंधित विशेषज्ञता के लिए- प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा	--	100
06	संबंधित विशेषज्ञता के लिए – शोध-प्रबंध और मौखिक परीक्षा	--	100

(6) ऊपर उल्लिखित विशिष्टताओं के प्रत्येक पेपर के लिए पाठ्यक्रम संबंधित विभाग द्वारा निर्दिष्ट किया जाएगा और अकादमिक निकाय द्वारा अनुमोदित किया जाएगा और समय-समय पर संशोधित किया जाएगा।

(7) अंतिम (द्वितीय) वर्ष के अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए आगामी पूरक परीक्षा प्रत्येक छह महीने में आयोजित की जाएगी।

(8) स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम की कुल अवधि छह वर्ष से अधिक नहीं होगी।

18. परीक्षा का संचालन - (1) सैद्धांतिक और प्रायोगिक परीक्षाओं के समय, परीक्षकों की नियुक्ति निदेशक द्वारा की जाएगी।

(2) परीक्षक प्रत्येक विशेषज्ञता या विषय के लिए सौ अंकों के तीन सैद्धांतिक प्रश्न पत्र तैयार करेगा और प्रायोगिक या मौखिक परीक्षा उन परीक्षकों द्वारा आयोजित की जाएगी जिन्होंने सैद्धांतिक पेपर तैयार किया है।

(3) परीक्षा में, प्रत्येक सैद्धांतिक प्रश्न पत्र कुल सौ अंकों का होगा, जिसमें दो भाग होंगे, अर्थात् भाग ए और भाग बी।

(4) एक उत्तर पुस्तिका के लिए दो अलग-अलग परीक्षकों द्वारा दो मूल्यांकन होंगे ताकि एकल मूल्यांकन में असंतुलित प्रकृति और परिणामी अप्रिय स्थिति को कम किया जा सके।

(5) दोहरे मूल्यांकन के बाद, दोनों स्कोरो में कुल अंको के बीस प्रतिशत तक भिन्नता होने पर दोनो स्कोरो के औसत को अंतिम स्कोर माना जाएगा।

- (6) भिन्नात्मक अंकों के मामले में, यदि भिन्न 0.5 या उससे ऊपर है, तो इसे अगले उच्चतम अंक तक पूर्णांकित किया जाएगा और यदि स्कोर 0.5 से नीचे है तो इसे निचले अंक मान तक पूर्णांकित किया जाएगा।
- (7) दोहरे मूल्यांकन के अंत में, यदि दो स्वतंत्र स्कोरों के बीच अंतर कुल अंकों के बीस प्रतिशत से अधिक है तो ऐसी उत्तर पुस्तिकाओं का तीसरे पात्र परीक्षक द्वारा मूल्यांकन कराया जाएगा।
- (8) उत्तर पुस्तिका के मूल्यांकन के लिए दो अलग-अलग परीक्षकों में से एक परीक्षक बाहरी होगा।
- (9) प्रायोगिक परीक्षा के लिए, दो परीक्षक होंगे, एक बाहरी होगा और एक प्रत्येक विशेषज्ञता या विषय के लिए आंतरिक होगा।
- (10) शोध प्रबंध दो परीक्षकों को भेजा जाएगा, एक बाहरी होगा और एक आंतरिक या गाइड होगा और परीक्षकों द्वारा शोध प्रबंध की समीक्षा करने पर, वही परीक्षक अंतिम (द्वितीय) वर्ष के स्कॉलर के लिए प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा एवं शोध प्रबंध तथा मौखिक परीक्षा दोनों का संचालन करेंगे।
- (11) इन नियमों में उल्लिखित एक मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर शिक्षक, जिसके पास कुल पाँच वर्ष का शिक्षण अनुभव है, जिसमें से संबंधित विषय में दो वर्ष का स्नातकोत्तर शिक्षण का अनुभव है वही स्नातकोत्तर परीक्षा के लिए परीक्षक के रूप में नियुक्त होने के लिए पात्र होगा।
- (12) परीक्षा के समय किसी भी कारण से बाहरी परीक्षक की अनुपलब्धता के मामले में, पीठासीन अधिकारी इसकी सूचना परीक्षा नियंत्रक को देते हुए परीक्षा आयोजित करने के लिए नए परीक्षक को नियुक्त करेंगे और नवनियुक्त परीक्षक अधिमानतः बाहरी होंगे और ऐसे परीक्षक की अनुपलब्धता की स्थिति में संबंधित विषय के आंतरिक वरिष्ठ फैकल्टी को नियुक्त किया जाएगा।
- 19. शोध प्रबंध-** (1) स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, प्रत्येक स्कॉलर संबंधित विशेषज्ञता से संबंधित विषय पर एक शोध प्रबंध तैयार करेगा और प्रत्येक शोध प्रबंध का विषय प्रायोग उन्मुख, निरर्थक दोहराव से मुक्त और आयुर्वेद विज्ञान के विकास में सहायक होगा।
- (2) प्रत्येक स्कॉलर अंतिम (द्वितीय) वर्ष के प्रारंभ में शोध प्रबंध के लिए प्रस्तावित शोध कार्य का सायनोप्सिस तैयार करेगा और अनुमोदन के लिए विभागीय अनुसंधान समिति के समक्ष प्रस्तुत करेगा।
- (3) सायनोप्सिस में शोध प्रबंध का पूरा शीर्षक, कार्य की आवश्यकता, कार्य की कार्ययोजना, विभाग के नाम के साथ कार्य के लिए आवश्यक बजट और मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक तथा सह-मार्गदर्शक अथवा सह-पर्यवेक्षक के नाम और पदनाम का स्पष्ट रूप से उल्लेख करना होगा।
- (4) प्रत्येक स्कॉलर मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक द्वारा हस्ताक्षरित कार्य की प्रगति रपोर्ट प्रत्येक सत्र के अंत में विभागीय अनुसंधान समिति के समक्ष प्रस्तुत करेगा और विभागीय अनुसंधान समिति कार्य की प्रगति का मूल्यांकन और निगरानी करेगी और तदनुसार इसका अनुमोदन करेगी और अनुसंधान कार्य पूर्ण होने के बाद स्कॉलर संस्थान द्वारा आयोजित सेमिनार में प्रस्तुति के रूप में अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत करेगा।
- (5) शोध प्रबंध में स्कॉलर द्वारा चुनी गई समस्या पर किए गए शोध के तरीकों और संभावनाओं को रिकॉर्ड पर रखा जाएगा और संस्थान द्वारा अनुमोदित गाइड या पर्यवेक्षक के मार्गदर्शन में पूरा करना होगा।
- (6) शोध प्रबंध के लिए किये गए काम का उपयोग साहित्य की खोज, इसके महत्वपूर्ण अध्ययन और इसके प्रायोगिक अनुप्रयोग और सीखने के लिए होगा और शोध प्रबंध में स्कॉलर द्वारा किये गये स्वयं के अनुसंधान शामिल होंगे।
- (7) शोध प्रबंध में साहित्य की आलोचनात्मक समीक्षा, पद्धति, शोध के परिणाम, अध्ययन के शोध निष्कर्षों के आधार पर की गई चर्चा, सारांश, निष्कर्ष और संदर्भ शामिल होंगे।
- (8) शोध-प्रबंध को ए4 आकार के कागज के दोनों तरफ एक इंच के मार्जिन के साथ टाइप किया जाना चाहिए और टाइपिंग 12 के फ्रॉन्ट आकार में टाइम्स न्यू रोमन के फ्रॉन्ट के साथ 1.5 लाइन रिक्ति और शीर्षक के साथ की जानी चाहिए। कवर संस्थान द्वारा निर्दिष्ट मानक प्रारूप में होगा और देवनागरी लिपियों के लिए यूनिकोड फॉन्ट का उपयोग करना होगा।
- (9) शोध प्रबंध या कार्य में कहीं भी किसी व्यक्ति की तस्वीर नहीं लगाई जाएगी और साथ ही कार्य किसी को समर्पित नहीं करना होगा और शीर्षक कवर और आंतरिक कवर का पैटर्न संस्थान द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार होगा।
- (10) शोध प्रबंध आमतौर पर चार्ट, आरेख, फोटोग्राफ, ग्रंथ सूची आदि सहित टाइप किए गए दो सौ पचास पृष्ठों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- (11) शोध प्रबंध में निष्कर्ष को कवर करने वाले अंतिम सारांश एक हजार पांच सौ शब्दों की मर्यादा में शामिल करना होगा।

(12) स्कॉलर को अंतिम परीक्षा से दो महीने पहले तथा संस्थान द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि से पूर्व शोध प्रबंध जमा करना होगा, न कि अंतिम तिथि के बाद।

(13) शोध प्रबंध में स्कॉलर, मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक और सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र शामिल होगा जिसमें कहा गया हो कि गाइड के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण के तहत स्कॉलर द्वारा काम किया गया है और डेटा एकत्र किया गया है जो प्रमाणित करता है कि वर्तमान शोध प्रबंध में उद्धृत कार्य को उचित रूप से स्वीकार किया गया है।

(14) मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक और सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक के प्रमाण पत्र के साथ बाध्य शोध प्रबंध और सारांश की प्रतियों की संख्या सॉफ्ट कॉपी के साथ निर्दिष्ट तिथि के भीतर संस्थान द्वारा समय-समय पर निर्धारित किए गए दिशानिर्देशों के अनुसार विभाग के प्रमुख द्वारा अग्रेषित करनी होगी।

(15) शोध प्रबंध का मूल्यांकन संस्थान द्वारा नियुक्त दो निर्णायकों द्वारा किया जाएगा, जिनमें से एक बाहरी और एक आंतरिक (अनुसंधान कार्य का मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक) होगा।

(16) परीक्षकों द्वारा शोध प्रबंध के अनुमोदन के बाद ही स्कॉलर को स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम के अंतिम (द्वितीय) वर्ष की परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाएगी।

(17) यदि शोध प्रबंध अनुमोदित नहीं किया जाता है, तो इसे निर्णायकों की टिप्पणियों के साथ स्कॉलर को वापस कर दिया जाएगा और इसे शोध प्रबंध की मौखिक परीक्षा के दौरान स्कॉलर द्वारा विस्तृत बिंदु-दर-बिंदु स्पष्टीकरण के साथ संशोधित किया जाएगा और यदि, यह परीक्षकों को संतुष्ट नहीं करेगा, तो यह शोध प्रबंध के अंकों में प्रदर्शित होगा।

(18) शोध प्रबंध, अनुमोदित होने पर, संस्थान की संपत्ति बन जाएगा और स्कॉलरों द्वारा किए गए शोध कार्य से संबंधित किसी भी प्रकाशन और बौद्धिक संपदा अधिकारों में इस संस्थान से संबद्धता वाले लेखक के रूप में पर्यवेक्षक या मार्गदर्शक के नाम का उल्लेख करना होगा और यदि किसी स्थिति में इसे कार्यान्वित नहीं किया जाता है, तो संस्थान कानूनी कार्रवाई शुरू कर सकता है।

(19) संबंधित विशेषज्ञता से सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक को सह-चयन करके अंतर-विषयक अनुसंधान किया जा सकता है।

(20) यह वांछनीय है कि प्रत्येक स्कॉलर अपने या अपने वर्तमान शोध प्रबंध कार्य के आधार पर एक शोध पत्र कम से कम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-शैक्षणिक अनुसंधान और नैतिकता संघ (यूजीसी-सीएआरई) में अनुक्रमित, समीक्षा वाली पत्रिका में प्रकाशित करें।

20. गाइड या पर्यवेक्षक- (1) नियम 21 में उल्लिखित संबंधित विषय या विशेषज्ञता का एक मान्यता प्राप्त स्नातकोत्तर शिक्षक, जिसके पास संबंधित विशेषज्ञता या विषय में एक वर्ष का स्नातकोत्तर शिक्षण अनुभव हो, मार्गदर्शक या पर्यवेक्षक के लिए पात्र होगा।

(2) गाइड या पर्यवेक्षक को स्कॉलरों का आवंटन संस्थान द्वारा विभागीय अनुसंधान समिति और डीन (शैक्षणिक) के परामर्श से तैयार किए गए रोस्टर और संबंधित गाइड या पर्यवेक्षक के तहत सीटों की उपलब्धता और प्रत्येक वर्ष के लिए प्रत्येक गाइड या पर्यवेक्षक के तहत अधिकतम तीन स्कॉलरों के आधार पर किया जाएगा।

(3) जब गाइडों की संख्या आनुपातिक रूप से कम हो, तो संकाय सदस्य की योग्यता और पदनाम को ध्यान में रखते हुए, उनके पास अतिरिक्त स्कॉलरों का भी पंजीकरण किया जा सकता है।

(4) शोध प्रबंध पूरा होने से पहले गाइड की सेवानिवृत्ति के मामले में, संबंधित विषय तथा विभाग का अगला पात्र सह-मार्गदर्शक या सह-पर्यवेक्षक या शिक्षक निदेशक से उचित अनुमति मिलने के बाद गाइड की जिम्मेदारी लेगा।

(5) यदि किसी स्कॉलर का गाइड किसी कारण से सेवानिवृत्त हो गया है या पद से इस्तीफा दे दिया है और उसके मार्गदर्शन में शोध कार्य पूरा हो चुका है तथा उसे विभाग प्रमुख द्वारा प्रमाणित किया जाता है तो निदेशक को उसी गाइड या पर्यवेक्षक के अधीन शोध प्रबंध प्रस्तुत करने की अनुमति देने का अधिकार है।

(6) किसी भी विशेषज्ञता में उप-विनियम (1) में उल्लिखित योग्य गाइड या पर्यवेक्षक की अनुपलब्धता के मामले में, संस्थान के निदेशक को अंतरिम उपाय के रूप में गाइड या पर्यवेक्षक के लिए पात्रता मानदंड में छूट देने का अधिकार है।

21. स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में मान्यता - निम्नलिखित योग्यताएं और अनुभव रखने वाले संस्थान के फैकल्टी को स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में मान्यता दी जाएगी:-

(क) संबंधित विषय या विशेषज्ञता में स्नातकोत्तर डिग्री; और

(ख) स्नातकोत्तर डिग्री के बाद स्नातकोत्तर शिक्षण या अनुसंधान का न्यूनतम तीन वर्ष का अनुभव या स्नातकोत्तर डिग्री के बाद स्नातक के तहत न्यूनतम पांच वर्ष का शिक्षण अनुभव; या

(ग) आयुर्वेद या किसी अन्य बुनियादी विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री के साथ न्यूनतम पांच वर्ष का शोध या औद्योगिक अनुभव रखने वाले फैकल्टी को संबंधित विषय या विशेषज्ञता के लिए संस्थान के विजीटिंग स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में मान्यता दी जा सकती है।

22. वेकेशन और छुट्टियाँ- (1) संस्थान के प्राधिकारी द्वारा निर्धारित किए गए अनुसार सर्दी और गर्मी के मौसम के दौरान स्कालरो को पंद्रह दिनों की छुट्टियाँ दो बार दी जायेगी और वेकेशन के साथ किसी भी प्रकार की छुट्टी नहीं जोड़ी जायेगी: बशर्ते कि निदेशक के पास असाधारण परिस्थितियों में अतिरिक्त छुट्टी स्वीकृत करने की शक्ति होगी।

(2) जिन स्कॉलरों को खेल, सेमिनार, अध्ययन दौरे में भाग लेने के लिए प्राधिकारी द्वारा प्रतिनियुक्त या अनुमति दी गई है, उन्हें झूटी या विशेष छुट्टी दी जाएगी और ऐसी छुट्टियाँ एक वर्ष में पंद्रह दिनों से अधिक नहीं होंगी; हालाँकि, निदेशक द्वारा विशेष मामले में छुट्टी को अधिकतम पंद्रह दिनों तक बढ़ाया जा सकता है।

(3) स्कॉलरों को पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी का चिकित्सा प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर एक वर्ष में पंद्रह दिनों की चिकित्सा छुट्टी की भी अनुमति दी जाएगी, इस छुट्टी को अगले शैक्षणिक वर्ष तक नहीं बढ़ाया जा सकता है।

(4) विशेष परिस्थितियों में, स्कॉलर को पंजीकृत चिकित्सा व्यवसायी द्वारा जारी वैध चिकित्सा प्रमाण पत्र के साथ चिकित्सा आधार के तहत अधिकतम साठ दिनों तक चिकित्सा अवकाश का लाभ उठाने की अनुमति दी जाएगी।

(5) स्टाइपेंड सीटों पर प्रवेश पाने वाले स्कॉलरों को निम्नलिखित के साथ नियम 22 के उप-विनियम (1) से (4) के तहत उल्लिखित प्रावधानों का पालन करना होगा, अर्थात्: -

(क) स्कॉलरों को प्रत्येक वर्ष दस दिनों तक आकस्मिक छुट्टी की अनुमति दी जाएगी और ऐसी छुट्टी को छुट्टियों या रविवार के साथ जोड़ा जा सकता है और स्कॉलर छुट्टियों सहित एक समय में अधिकतम दस दिनों तक ऐसी छुट्टी का लाभ उठा सकते हैं;

(ख) छुट्टियों के बीच में, अवकाश को छुट्टी माना जाएगा; और

(ग) आकस्मिक अवकाश को छुट्टी और चिकित्सा अवकाश के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है, और ऐसी छुट्टी को अगले शैक्षणिक वर्ष में आगे नहीं बढ़ाया जा सकता है।

(6) जहां भी पात्रता हों, ज्वाइनिंग के बाद मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961 (1961 का 53) के अनुसार स्कॉलरों को मातृत्व या बाल देखभाल अवकाश दिया जाएगा, ऐसे स्कॉलरों को नियम 13 के उप-विनियम (1) में निर्दिष्ट अध्ययन अवधि पूरी करनी होगी।

(7) उप-नियम (6) में उल्लिखित छुट्टी, अध्ययन की अवधि के दौरान महत्वपूर्ण दस्तावेज़ प्रस्तुत करने पर एक बार दी जाएगी और इस छुट्टी के साथ किसी भी प्रकार की छुट्टी नहीं जोड़ी जाएगी।

(8) निदेशक के पास असाधारण परिस्थितियों में तीस दिन तक की छुट्टी स्वीकृत करने की शक्ति है और असाधारण परिस्थितियों में स्वीकृत ऐसी छुट्टियों के लिए कोई स्टाइपेंड नहीं दिया जाएगा।

(9) ऐसी छुट्टी जो असाधारण परिस्थितियों में स्वीकृत हो, के लिए किसी स्टाइपेंड का भुगतान नहीं किया जाएगा।

(10) डीन (शैक्षणिक) की पूर्व मंजूरी के बिना या ऊपर उल्लिखित सीमा से अधिक स्टाइपेंडरी या नॉन-स्टाइपेंडरी स्कॉलरों द्वारा ली गई किसी भी अनुचित छुट्टी या अनुपस्थिति को जानबूझकर राखी गई अनुपस्थिति माना जाएगा और ऐसी अवधि के लिए कोई स्टाइपेंड नहीं दिया जाएगा, और अनुशासनात्मक कार्रवाई प्रस्तावित की जा सकती है जिसमें छात्रवृत्ति की समाप्ति और संस्थान द्वारा भुगतान किए गए स्टाइपेंड की वसूली शामिल हो सकती है।

(11) प्राधिकारी के पास बिना किसी स्पष्टीकरण के अवकाश सहित छुट्टी रद्द करने का अधिकार सुरक्षित है।

23. अनुचित साधनों और उच्छृंखल आचरण पर नियंत्रण- (1) कोई भी छात्र परीक्षा और तत्संबंधी कार्यों के संबंध में अनुचित साधनों का उपयोग या अव्यवस्थित आचरण नहीं करेगा, और ऐसा करने पर उसे संस्थान के परीक्षा के प्रावधानों के अनुसार अपराध की प्रकृति और गंभीरता के आधार पर दंडनीय अपराध माना जाएगा।

(2) रिपोर्ट प्राप्त होने पर या किसी भी छात्र के कदाचार के संबंध में किसी परीक्षा या परीक्षण के मामले का पता चलने पर, निदेशक द्वारा नियुक्त परीक्षा अनुशासनात्मक कार्रवाई समिति को उसमें निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करने के बाद छात्र को दंडित करने की शक्ति होगी और यदि अभ्यर्थी के विरुद्ध परीक्षा में कदाचार का आरोप सिद्ध हो जाता है तो समिति द्वारा उस विद्यार्थी को निम्नलिखित में से कोई एक या अधिक दंड दिया जा सकता है, अर्थात्:-

(क) किसी परीक्षा में स्कूलर के प्रवेश को रद्द करना या अस्वीकार करना और उसके द्वारा भुगतान की गई कोई भी फीस जप्त करना;

(ख) उस परीक्षा का परिणाम रद्द करना जिसके साथ आरोप जुड़ा हुआ है;

(ग) उसे संस्थान के किसी भी कार्यक्रम में शामिल होने से एक विशिष्ट अवधि के लिए रोक देना जो पांच वर्ष या उससे अधिक हो सकती है;

(3) नीचे दी गई अनुसूची उक्त अनुसूची के कॉलम (2) में उल्लिखित छात्र के अनुचित, साधनों या कृत्यों के लिए कॉलम (3) में दंड का प्रावधान करती है।

अनुसूची:

क्र.सं.	अनुचित साधन अथवा कृत्य	दंड
(1)	(2)	(3)
(1)	परीक्षा हॉल में उत्तर पुस्तिका के अतिरिक्त किसी भी सामग्री पर प्रश्न या उत्तर अथवा कुछ भी लिखना।	संबंधित विषय का परिणाम रद्द किया जा सकता है
(2)	परीक्षा हॉल में परीक्षा के विषय से संबंधित सामग्री लाना अर्थात्:- (क) पेपर, पुस्तक या नोट्स; या (ख) छात्र द्वारा पहने गए कपड़ों के किसी भी हिस्से पर या उसके शरीर के किसी भी हिस्से, या टेबल अथवा डेस्क पर लिखित नोट्स; या (ग) फुट-रूल या सेट-स्क्वायर, प्रोट्रेक्टर, स्लाइड रूलर आदि जैसे उपकरण जिन पर नोट्स लिखे हों।	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(3)	उत्तर-पुस्तिका से नकल करना पाया गया या सिद्ध हो जाता है अथवा अन्यथा यह स्थापित हो जाता है कि छात्र ने, (क) परीक्षा के दौरान या उसके बाद किसी भी समय किसी भी तरीके से किसी भी कागजात, किताबें, नोट्स, उत्तर-पुस्तिका या किसी अन्य स्रोत से नकल की या मदद ली; या (ख) किसी अन्य छात्र को अपनी उत्तर-पुस्तिका से नकल करने की अनुमति दी; या (ग) किसी अन्य छात्र से सहायता प्राप्त की है या सहायता की है; या (घ) किसी अन्य छात्र के साथ अपनी उत्तर-पुस्तिका या उसके किसी भाग का आदान-प्रदान किया	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(4)	प्रश्न पत्र (या उसके किसी भाग) में बाहर से उत्तीर्ण होने या उत्तीर्ण होने का प्रयास करने पर	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(5)	आपत्तिजनक सामग्री को निगलना, उसे लेकर भाग जाना या उसे गायब कर देना या किसी अन्य तरीके से नष्ट करना।	तीन परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(6)	किसी उत्तर-पुस्तिका को अंदर या बाहर ले जाना या उसे बदलना अथवा उत्तर लिखने के बाद बदल देना (परीक्षा के दौरान या बाद में किसी व्यक्ति की सहायता या सहायता के बगैर या किसी व्यक्ति के मिलीभगत से)।	तीन परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(7)	उत्तर-पुस्तिका पर्यवेक्षक को न सौंपना या उत्तर-पुस्तिका को नष्ट कर देना।	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(8)	परीक्षा हॉल में गंभीर कदाचार या कर्मचारियों के साथ दुर्व्यवहार अथवा परीक्षा हॉल के अंदर या बाहर परीक्षा ड्यूटी पर नियुक्त कर्मचारियों के साथ बल प्रयोग।	दो परीक्षाओं में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(9)	अवज्ञा, सीट परिवर्तन, परीक्षा हॉल में या उसके आसपास दुर्व्यवहार या उत्तर पुस्तिका पर किसी अन्य छात्र की सीट संख्या लिखना।	एक परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(10)	अंक बढ़ाने या खाली पन्नों पर उत्तर लिखने के लिए परीक्षक के पास	तीन परीक्षाओं में बैठने से वंचित

	जाना।	किया जा सकता है
(11)	प्रतिरूपण-प्रतिरूपणकर्ता (जो किसी अन्य छात्र के लिए लिखता है), यदि वह इस संस्थान का छात्र होने के साथ-साथ प्रतिरूपित छात्र भी है।	छात्र को संस्थान से स्थायी रूप से वंचित करना।
(12)	जब उत्तर-पुस्तिका में शामिल हो, (क) अपमानजनक या अश्लील अथवा धमकी भरी भाषा; या (ख) परीक्षक से अपील; या (ग) पहचान प्रकट करने के लिए विशिष्ट चिह्न या चिह्न।	संबंधित विषय का परिणाम रद्द किया जा सकता है
(13)	आवेदन पत्र में किसी भी प्रकार की गलत जानकारी के आधार पर परीक्षा में प्रवेश।	एक परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है
(14)	यदि छात्र वीडियो फुटेज में बात करते या कोई अन्य कदाचार करते हुए या परीक्षा हॉल में मोबाइल फोन या कोई अन्य इलेक्ट्रॉनिक गैजेट रखते हुए पाया जाता है।	एक परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है

(4) किसी भी परीक्षा में किसी भी अनुचित साधन या कृत्य को अभ्यर्थी के विरुद्ध सिद्ध किया जाता है, जो उप-विनियम (3) में उल्लिखित नहीं है, निदेशक द्वारा नियुक्त परीक्षा अनुशासनात्मक कार्यवाई समिति के पास छात्र द्वारा प्रयुक्त अनुचित साधनों या कृत्यों के मामले के अनुसार सजा निर्धारित करने की शक्ति होगी।

24. उपाधि प्रदान करना- जिन स्कॉलरों ने डिग्री कार्यक्रम पूर्ण कर लिया है और अंतिम (द्वितीय) वर्ष की परीक्षा में सफल घोषित किए गए हैं, उन्हें निम्नलिखित डिग्री प्रदान की जाएगी-

(क) मास्टर ऑफ फार्मेसी (आयुर्वेद);

(ख) मास्टर ऑफ साइंसेज (मेडीसिनल प्लांट्स);

संबंधित विशेषज्ञता में, संस्थान के आगामी दीक्षांत समारोह में व्यक्तिगत रूप से या उनकी अनुपस्थिति में उसके विकल्प को आवश्यक शुल्क के भुगतान पर डिग्री प्रदान की जायेगी।

25. शुल्क - संस्थान के शासी निकाय द्वारा समय-समय पर निर्धारित किया गया शुल्क स्कॉलरों से लिया जाएगा जो उन पर लागू है और संस्थान के डिग्रीधारकों को नामांकन शुल्क का भुगतान करने से छूट दी जाएगी।

26. विविध- स्नातकोत्तर डिग्री कार्यक्रम करने वाले स्कॉलरों को किसी भी वैतनिक या अवैतनिक नियुक्तियों या सेवा अथवा काम करने या स्व-रोजगार करने की अनुमति नहीं दी जाएगी और स्कॉलर को किसी भी नई नौकरी या नियुक्ति के लिए आवेदन जमा करते समय संस्थान से 'अनापत्ति प्रमाण पत्र' प्राप्त करने के लिए निर्देशित किया जाता है और स्टाइपेंडरी सीटों के मामले में, डिफॉल्टर, अनुशासनात्मक कार्यवाई जैसे कि स्टाइपेंड की वसूली और प्रवेश समाप्ति के लिए पात्र होंगे।

27. प्राधिकरण की विवेकाधीन शक्तियां - संस्थान के निदेशक के पास इन नियमों के प्रावधानों की व्याख्या में किसी भी विसंगति के लिए, और कारणों को लिखित रूप में दर्ज करने के बाद, संस्थान के शासी निकाय के अनुमोदन या अनुसमर्थन के साथ इन नियमों के किसी भी प्रावधान में छूट दे देने संबंधी, अंतिम अधिकार है।

डॉ. अनूप ठाकर, निदेशक

[विज्ञापन-III/4/असा./811/2023-24]

अनुलग्नक

[विनियम 12 देखें]

एम.फार्मा (आयुर्वेद) के स्कॉलर द्वारा निष्पादित किये जाने वाला बांड
(केवल स्टाइपेंडरी सीटों पर प्रवेश प्राप्त छात्रों के लिए)

..... द्वारा प्राप्त की जाने वाली मासिक अध्येतावृत्ति के लिए आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की अध्येतावृत्ति।

यह बंध-पत्र जामनगर में के दिन यहां आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के प्रथम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम एम.फार्मा (आयुर्वेद).....के छात्र.....जिसे इसमें आगे प्रथम पक्ष का छात्र कहा गया है और श्री.....के पुत्र/पुत्री....., निवासी.....(प्रथम प्रतिभू) जिसे इसमें आगे सामूहिक रूप से द्वितीय पक्ष के प्रतिभूओं कहा गया है, द्वारा आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, जामनगर के पक्ष में किया गया है।

जबकि इस संस्थान में आयुर्वेद में दो वर्षीय स्नातकोत्तर फार्मसी पाठ्यक्रम में प्रवेश होने पर छात्र को अपने प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के पहले वर्ष में ₹.....प्रति माह और दूसरे वर्ष में ₹..... प्रति माह की वृत्तिका मिलेगी, और जबकि आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान इसे शर्तों, यहां इसके बाद छात्र द्वारा उचित निष्पादन हेतु प्रतिभूति, पर प्रदान करने के लिए सहमत हो गया है।

अब यह बंधपत्र निम्नलिखित का साक्षी है:-

1. उक्त करार के अनुसरण में और आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान द्वारा छात्रों को उपरोक्त प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान स्नातकोत्तर छात्र को पहले वर्ष में ₹.....प्रति माह और दूसरे वर्ष में ₹.....प्रति माह की वृत्तिका देने पर विचार करते हुए, छात्र एतद्वारा आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के साथ वचनबद्ध है कि वह आयुर्वेद में स्नातकोत्तर फार्मसी पाठ्यक्रम में अपने अध्ययन जारी रखेगा और नियमों के तहत यथा अपेक्षित सभी परीक्षाओं में उपस्थित होने के बाद पाठ्यक्रम पूरा करेगा।
2. उक्त पाठ्यक्रम के शुरू होने और इसकी दो वर्ष की अवधि (सफलतापूर्वक) पूर्ण होने के बाद, मैं एतद्वारा सहमत हूं और इसका पालन करता हूं/करती हूं कि मैं संस्थान या किन्हीं अन्य संस्थानों या आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान द्वारा आदेशित और निर्देशित किसी अन्य संस्थान की दो वर्ष की अवधि के लिए सेवा करूंगा/करूंगी और यदि मैं संस्थान की सेवा करने में चूक करने पर इस शर्त का उल्लंघन करता हूं/करती हूं तो मैं एतद्वारा सहमत हूं और वचन देता हूं/देती हूं कि मेरी ओर से चूक होने पर, कार्यकाल के लिए मेरे द्वारा आहरित की गई उक्त स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम दो वर्ष की कुल परिलब्धियों को मैं वापस करने के लिए उत्तरदायी होऊंगा/होऊंगी और मैं संस्थान द्वारा मेरे लिए किए गए सभी खर्चों का भुगतान करने के लिए भी उत्तरदायी होऊंगा/होऊंगी।
3. उक्त करार के अनुसरण में, उक्त छात्र संस्था में रहते हुए, किसी कार्य, चूक, लापरवाही, या निर्णय में त्रुटि के कारण संस्था को नुकसान या क्षति पहुंचाए बिना, अपने सभी कर्तव्यों का विधिवत और ईमानदारी से निष्पादन, प्रदर्शन और निर्वहन करेगा।
4. उक्त करार के अनुसरण में और पूर्वोक्त को ध्यान में रखते हुए, छात्र और प्रतिभू एतद्वारा सहमत हैं कि यदि छात्र इस संबंध में वचन के अनुसार पाठ्यक्रम पूरा करने में विफल रहता है या उपरोक्त खंड (1) में निहित या किसी भी कारण से अपने शोध कार्य को बंद कर देता है, तो छात्र और प्रतिभू संयुक्त रूप से और अलग से, आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान द्वारा भुगतान की गई और उक्त छात्र द्वारा प्राप्त की गई अध्येतावृत्ति की कुल राशि आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान को भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होंगे।

5.

छात्र और प्रतिभू इस बात से सहमत हैं कि यदि छात्र प्रवेश के 2 (दो) महीने के भीतर बिना किसी पर्याप्त कारण से या प्रवेश के 2 (दो) महीने बाद किसी भी कारण से संस्थान छोड़ देता है, तो उसे आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान को अपने मूल प्रमाण-पत्र/अंक पत्र वापस पाने के लिए अग्रिम रूप से 2,00,000/- (दो लाख रुपए रुपये मात्र) का भुगतान करना होगा।

इसके साक्ष्यस्वरूप इस बंधपत्र पर छात्र और प्रतिभूओं द्वारा उपर्युक्त दिन, माह और वर्ष को हस्ताक्षर-
छात्र द्वारा हस्ताक्षरित: _____

पता:

1. गवाह:

2. गवाह:

प्रथम प्रतिभू द्वारा हस्ताक्षरित:

तिथि:

पता:

1. गवाह:

2. गवाह:

द्वितीय प्रतिभू द्वारा हस्ताक्षरित:

तिथि:

पता:

1. गवाह:

2. गवाह:

मेरे समक्ष

INSTITUTE OF TEACHING AND RESEARCH IN AYURVEDA**NOTIFICATION**

New Delhi, the 27th February, 2024

F. No. L-12015/25/2021-AS (III).- In exercise of the powers conferred by clause (k), sub-section (1) of section 28 and clause (f) of section 13 of the Institute of Teaching and Research in Ayurveda Act, 2020 (16 of 2020), the Institute of Teaching and Research in Ayurveda, with the previous approval of the Central Government, hereby makes the following regulations, namely:-

- 1. Short title and commencement.**- (1) These regulations may be called the Institute of Teaching and Research in Ayurveda, Post Graduate- Pharmacy Regulations 2024.
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

- 2. Definitions.**- (1) In these regulations, unless the context otherwise requires,-

- (a) "Act" means the Institute of Teaching and Research in Ayurveda Act, 2020 (16 of 2020);
- (b) "applicant" means an individual who applies for admission to the Post Graduate degree programmes of the institute in a prescribed application form;
- (c) "Co-Guide" or "Co-Supervisor" means an additional Guide or Supervisor, wherever needed, as approved by the Departmental Research Committee to supervise or guide the research work of the scholar and the Co-guide or Co- Supervisor may or may not be a fulltime faculty of the institute;
- (d) "Co-Principal Investigator" means an additional investigator, wherever needed, as approved by the Institutional Research Committee to help the Principal Investigator for research project and he may or may not be a fulltime faculty of the Institute.
- (e) "Controller of Examinations" means Controller of Examinations appointed by the competent authority of the institute;
- (f) "Guide" or "Supervisor" means a member of the full time faculty of the institute who has been approved by the Academic Council to guide or supervise the research work of the research scholar;
- (g) "Principal Investigator" means person nominated by the Institute for research project to communicate with Institutional Research Committee in relation to project related matters and generation of intellectual property during execution of project.
- (h) "Scholar" means a person who has been admitted for the Post Graduate degree programme and in compliance with these regulations;
- (i) "Teacher" means a person appointed as Lecturer or Assistant Professor, Reader or Associate Professor, Professor and a person appointed as Pharmacologist, Pharmaceutical Chemist, Pharmacognosist, Biochemist and Microbiologist in the institute on regular basis;

- (2) The words and expressions used in these regulations and not defined, but defined in the Act shall have the same meaning as assigned in the Act.

- 3. Admission Committee.**- (1) There shall be an admission committee consisting of the following members, namely:-

Admission Committee of the Institute.		
1.	Director	Chairperson;
2.	Deputy Director (Pharmacy)	Member;
3.	Dean (Academic)	Member;
4.	Heads of Laboratories (Laboratory of Pharmacology, Pharmaceutical Chemistry, Pharmacognosy).	Members; and
5.	Heads of Departments (Department of Rasashastra and Bhaishajya Kalpana and Dravyaguna)	Members.

- (2) The admission committee shall be responsible for conducting counseling, interview and admission process in accordance with these regulations and admission committee shall be constituted by the Director of the institute every year to conduct the admission process.
- (3) Minimum fifty per cent. members are required to fulfill the quorum of the meeting.

- 4. Institutional Research Committee.-** (1) There shall be an Institutional Research Committee consisting of the following members, namely:-

Institutional Research Committee of the Institute.		
1.	Director	Chairperson;
2.	Deputy Director (Post Graduate)	Member;
3.	Deputy Director (Pharmacy)	Member;
4.	Dean (Academic)	Member;
5.	Member Secretary, Institutional Ethics Committee	Member;
6.	Member Secretary, Institutional Animal Ethics Committee	Member;
7.	Biostatistician	Member;
8.	Head- of Biochemistry or Pathology or Microbiology, nominated by the Director on a rotation basis	Member;
9.	Head- of Pharmacology or Pharmaceutical Chemistry or Pharmacognosy, nominated by the Director on a rotation basis	Member;
10.	Three head of the teaching departments nominated by the Director on a rotation basis.	Members;
11.	Head, Account section of the institute	Member;
12.	Invitee External expert(s) by the Director as required	Member(s); and
13.	Dean (Research)	Member-Secretary.

- (2) The Institutional Research Committee shall be constituted by the Director on the recommendations of the Dean (Research) for a period of three years.
- (3) The Institutional Research Committee, while making the recommendations shall ensure that the same are in conformity with these regulations.
- (4) The Institutional Research Committee shall have the following powers and functions, namely:-
- to review and monitor the research activities of the institute;
 - to review and approve the research proposals and other research project related matters;
 - to examine the recommendations of the Departmental Research Committee and make appropriate decisions;
 - to scrutinise the applications of the sponsoring agencies for determining the nature, purpose, quality and feasibility of the proposed sponsored research work or project and to approve and make necessary recommendations, if any;
 - to appoint the Principal Investigator for the proposed sponsored research work or project;
 - to change the Principal Investigator of research projects under special circumstances by giving preference to the Co- Principal Investigator, if any;
 - to review and recommend the Memorandum of Understanding with the any reputed organisation or agencies.
- (5) Institutional Research Committee shall meet quarterly or at least twice in year:
Provided that the Chairperson of the Institutional Research Committee shall call the meeting at any time to address the research related activities.
- (6) After each Institutional Research Committee meeting, Member-Secretary shall prepare the minutes of the meeting and after circulation among members shall be signed by Member-Secretary with the approval of Chairperson and copy of the minutes shall be communicated to the Director and Controller of Examination and other concerned.
- (7) Minimum fifty per cent. members are required to fulfil the quorum of the meeting.
- 5. Departmental Research Committee.-** (1) For each department of Pharmacy, a Departmental Research Committee shall be constituted by the Director.
- (2) The Departmental Research Committee of each department shall be constituted separately by the Institute after development of full fledged departments and till then, the present Departmental Research Committee may continue.
- (3) The common Departmental Research Committee shall consist of minimum five members and minimum three members are required to fulfill the quorum.

- (4) A regular faculty with Ph.D. degree shall be member of the Departmental Research Committee and the Departmental Research Committee shall have the following members namely:-

(A) DEPARTMENTAL RESEARCH COMMITTEE OF MASTER OF PHARMACY (AYURVEDA),-

1.	The Head of the department of Rasashastra and Bhaishajya Kalpana	Chairperson;
2.	The Head of department of Dravyaguna	Member;
3.	One Professor or Associate Professor from the department of Rasashastra and Bhaishajya Kalpana	Members; and
4.	Head of Departments of Pharmacology, Pharmaceutical Chemistry, and Pharmacognosy	Members.

(b) Departmental Research Committee of Master of Sciences (Medicinal Plants),-

1.	The Head of the department of Dravyaguna	Chairperson;
2.	The Head of department of Rasashastra and Bhaishajya Kalpana	Member;
3.	One Professor or Associate Professor from the department of Dravyaguna	Members; and
4.	Head of Departments of Pharmacology, Pharmaceutical Chemistry, and Pharmacognosy	Members.

- (5) The Departmental Research Committee shall appoint one of its members as Member-Secretary.
- (6) The Dean (Research) is empowered to attend any Departmental Research Committee meeting and shall be considered as member of the particular meeting.
- (7) The Chairperson shall be in the rank of Professor and in case of his unavailability, the Director may appoint suitable person as Chairperson among the members of common Departmental Research Committee.
- (8) The Chairperson of Departmental Research Committee shall have power to co-opt such members of the staff of the institute as may be helpful to them in their deliberation as temporary member.
- (9) The concerned Guide or Supervisor or Co-guide or Co-supervisor shall be invited to participate in the Departmental Research Committee meeting only during the presentation of scholars under their supervision.
- (10) The Departmental Research Committee shall meet whenever require or at least quarterly.
- (11) The Departmental Research Committee shall have the following powers and functions, namely:-
- to approve the field of research in which the scholars shall be recommended to carry on research;
 - to recommend the change the Guide or Supervisor with justification, if necessary; and
 - to evaluate the progress reports of the research works and to discuss all other issues related to research work.
- (12) After each Departmental Research Committee meeting, the Member-Secretary of the Departmental Research Committee shall prepare the minutes of the meeting and after circulation among members shall be signed by the Member-Secretary and Chairperson of the Departmental Research Committee.
- (13) A copy of the minutes shall be communicated to the Dean (Academic) and (Dean) Research.
- (14) In case of any dispute in Departmental Research Committee, the matter shall be referred to the Institutional Research Committee, whose decision shall be final and abiding.
- 6. Specialties available for Post Graduate Degree Programme:-** (1) The Institute shall grant the Post Graduate Degree in various specialties as mentioned in clauses (a) and (b) of sub-regulation (2) of regulation 6.
- (2) The Post Graduate Degree shall be allowed in the following specialty and departments, namely:-
- Master of Pharmacy (Ayurveda) degree programme mentioned in column (4) of the table shall be allowed in specialty and department mentioned in column (2) and (3) of the table. –

TABLE

Sr. No.	Name of specialty.	Department in which Pharmacy- Post Graduate degree to be conducted.	Degree awarded after completion of programmes and Specialty.
(1)	(2)	(3)	(4)
1.	Rasashastra and BhaishajyaKalpana	Department of Rasashastra and BhaishajyaKalpana	M. Pharm (Ayurveda)- Rasashastra and Bhaishajya Kalpana;
2.	Dravyaguna Vigyan	Department of Dravyaguna	M. Pharm (Ayurveda)- Dravyaguna;
3.	Pharmacology and Toxicology	Department of Pharmacology	M. Pharm (Ayurveda)- Pharmacology;
4.	Pharmaceutical Chemistry orAnalytical Chemistry	Department of Chemistry	M. Pharm (Ayurveda)- Pharmaceutical Chemistry or Analytical Chemistry; and
5.	Pharmacognosy	Department of Pharmacognosy	M. Pharm (Ayurveda)- Pharmacognosy.

(b) Master of Science (Medicinal Plants)Degree Programme Mentioned In Column (4) Of The Table Shall Be Allowed In The Specialty And Department Mentioned In Columns (2) And (3) Of The Table:

Sr. No.	Name of specialty.	Department in which Medicinal Plants- Post Graduate degree to be conducted.	Degree awarded aftercompletion of programmes and Specialty.
1.	Ayurvedic drug formulations	Department of Rasashastraand Bhaishajya Kalpana	M. Sc. (Medicinal Plants)- Bhaishajya Kalpana;
2.	Medicinal Plants or Natural Products	Department of Dravyaguna	M. Sc. (Medicinal Plants)- Dravyaguna;
3.	Pharmacology and Toxicology	Department of Pharmacology	M. Sc. (Medicinal Plants)- Pharmacology;
4.	Pharmaceutical Chemistry orAnalytical Chemistry or Phytochemistry	Department of Chemistry	M. Sc. (Medicinal Plants)- PharmaceuticalChemistry or AnalyticalChemistry or Phytochemistry;
5.	Pharmacognosy	Department of Pharmacognosy	M. Sc. (Medicinal Plants)- Pharmacognosy;
6.	Plant Biochemistry	Department of Biochemistry	M. Sc. (Medicinal Plants)- Biochemistry; and
7.	Plant Microbiology	Department of Microbiology	M. Sc. (Medicinal Plants)- Microbiology.

7. **Eligibility for admission in Post Graduate Degree programme.-** (1) For admission in Master of Pharmacy (Ayurveda) degree programme, the candidate shall be a B. Pharm (Ayurveda) from a recognised University.
- (2) For admission in Master of Sciences (Medicinal Plants) degree programme, the candidate shall be a graduate in any one of the disciplines i.e. Science (Botany as one of the subject of study), Pharmacy, Agriculture, Ayurveda, Siddha, Unani or its equivalent awarded by statutory University or statutory body recognised by the Central Council of Indian Medicine.
8. **Date of Admission.-** Admission in Post Graduate Degree programme shall be once in a year, preferably in the month of August-September of every calendar year.

- 9. Mode of Admission.-** (1) The Admission committee of Pharmacy of the Institute shall conduct the admission process.
- (2) The Chairperson of the admission committee shall appoint sub-committees for confidential works related to admission process.
- (3) For admission in Master of Pharmacy (Ayurveda), the candidate has to qualify through Post Graduate Entrance examination according to qualifying criteria laid down by the institute and for this purpose candidate shall apply in a prescribed application form, which shall be available on the website of the institute within the date fixed by the institute along with the application fees declared time to time through online mode.
- (4) There shall be written entrance examination of one hundred marks, which shall be based on multiple choice question paper on syllabus of Bachelor of Pharmacy(Ayurveda).
- (5) The merit of entrance examination shall be valid only for the current admission process and shall not carry forward to next year.
- (6) The constituted committee of the institute shall prepare merit lists of the qualified applicants of each category based on their entrance examination merit score (eighty per cent. weightage) and final year percentage of bachelor degree programme (twenty per cent. weightage).
- (7) According to the merit list candidates shall be called for counseling and in each category, the number of candidates called for counseling shall be two times the number of seats.
- (8) The candidate called for counseling shall have to physically present along with all necessary original documents within the time limit specified by the institute.
- (9) The candidate in order of merit shall exercise their choice of specialty according to availability of seats in their respective category.
- (10) The admission to Master of Sciences (Medicinal Plants) degree programme shall be on merit basis of the qualifying examination of Bachelor degree.
- (11) Foreign National candidates seeking admission from abroad shall submit their applications to Institute of Teaching and Research in Ayurveda or through Indian Council for Cultural Relations (for availing AYUSH Scholarship for foreign nationals), Government of India, New Delhi.
- (12) The foreign national candidates are exempted from the entrance examination and the admission to one seat for foreign candidate is on the basis of the merit of the candidature.
- (13) All the selected candidates shall be subjected to medical fitness and shall not be permitted to join the degree programme unless declared medically fit.
- 10. Reservation.-** (1) The reservation for different categories (Scheduled Caste, Scheduled Tribe, Other Backward Class, Economically Weaker Section, Person with benchmark disabilities) shall be as per guidelines from Department of Personnel and Training, Government of India at the time of admission.
- (2) One non-stipendiary seat shall be reserved for foreign national candidates having equivalent degree and these candidates shall be nominated by the Ministry of Ayush from the application received from the Indian Council for Cultural Relations.
- (3) If any vacancy arises out of reserved quota seats, it shall be filled strictly by following the applicable Central Government reservation norms.
- 11. Stipend.-** (1) The scholars who are admitted on stipendiary seats shall be paid monthly stipend as determined by the institute from time to time for a period not exceeding two years subject to their satisfactory attendance, main training, research progress and conduct, and in case of failure in first year examination, stipend shall be stopped till passing the examination and promotion to next year.
- (2) The scholars giving up studies in the middle of the session shall be required to refund the whole amount of stipend paid to the scholar since joining the Post Graduate degree programme along with bond amount of Rupees two Lakhs.
- (3) The Director of the institute shall be the competent authority to decide such cases and in the event of the death of a scholar during the study, no recovery of the stipend paid shall be made.
- 12. Bond.-** (1) Every selected candidate shall have to execute a bond with the Institute before joining the Post Graduate degree programme in the prescribed form as per Annexure.

(2) If the scholar leaves the programme in between, the scholar shall have to pay Rupees two Lakhs to the Institute as compensation in advance to get relieved from the Institute along with the stipend paid in advance.

13. Tenure of degree programme and attendance.- (1) The duration of Post Graduate Degree programme shall be two years, out of which first year shall be

devoted to common course and final (second) year devoted to specialty course with dissertation or project work.

- (2) If a student due to any reason leaves the degree programme in between with a due permission of authority of the institute, he shall be allowed to complete the degree programme within maximum duration of six years from the date of admission.
- (3) The scholars shall be required to attend at least seventy-five per cent. of total lectures and practical separately to become eligible to appear in the examination and for the purpose, on the recommendation of Deputy Director (Pharmacy), the Director shall be competent authority for condoning the deficiency of attendance up to five per cent. in a year.
- (4) On continued absence of the scholar for more than thirty days without prior permission of the Deputy Director (Pharmacy) or Director, the admission in Post Graduate degree programme shall be terminated automatically without any notice.
- (5) The scholars shall be required to attend the Pharmacy and other duties as allotted to them during the degree programme.
- (6) The final (second) year scholars shall be required to attend the allotted department for dissertation and other research work during the tenure of study.
- (7) The scholars shall attend special lectures, demonstrations, workshop, seminars, training, study tours and such other activities which may be arranged by the institute from time to time.
- (8) The scholars shall not be permitted to join any other full time degree programme simultaneously during study period, but may be permitted to join diploma or certificate course, without disturbing the assigned duties and studies, only after permission from Guide, Head of the department, Deputy Director (Pharmacy) and Director of the institute.
- (9) If the scholar gets selected for a permanent appointment in any Government body during the tenure of degree programme, the scholar may join the services and may complete the degree programme after getting due permission from the employer within a period of six year from the date of joining in the Institute.
- (10) If the scholar fails to complete the study within a period of six years from the joining date in the institute, after a year joining to service, the admission shall be deemed cancelled and he shall be liable under sub-regulation (3) of regulation 11, if on stipendiary seats.
- (11) In case of rejoining the study, the scholar shall fulfill the criteria of seventy-five per cent. attendance in each year and dissertation completion before appearing for the final (second) examination and if the scholar fails to fulfill these criteria, he shall not be eligible to appear for the final (second) year examination.

14. Method of Training.- (1) Intensive training shall be given in Ayurvedic pharmacy or medicinal plants or research along with comparative and critical study in the respective specialty for which the emphasis shall be given on in- service training and practical.

- (2) The scholars are required to know about the methods and techniques of research work done in their respective specialty.
- (3) The scholars shall be required to participate in the teaching and training programmes of Under Graduate scholars, in their specialty or subject.
- (4) The training shall aim to extend the knowledge of the scholar to undertake independent work as a specialist.
- (5) The thorough and intensive training on a planned programme shall be given to the scholars and such programme shall be available for the inspection and scrutiny of the Deputy Director (Pharmacy) or Director if required.
- (6) Adequate training in teaching technology and research methods shall be provided during the degree programme.

- (7) Study tour shall be a part of teaching and training and the study tour shall strictly be at the places related to the Pharmacy or Medicinal Plants or Research and shall aim to add the sum of extra information and knowledge of the field and the study tour may include the visit of following places in India, namely:-
- ayurvedic industry;
 - any forest or place for observation of herbs or medicinal plants;
 - research centers and laboratories;
 - archeological sites related to Ayurveda and Pharmacy; and
 - leading National academic Institutes.
- (8) Medium of instructions shall be in Hindi, English or Sanskrit.
- 15. Examinations.-** (1) The Post Graduate degree programme shall have two main examinations, which are first year examination and final (second) year examination.
- (2) The first year examination shall be held at the end of the first academic year in the subjects prescribed for the first year course of study.
- (3) The final (second) year examination shall be held at the end of the final (second) academic year in the specialty course with dissertation or project work in concerned subject of specialisation.
- (4) The examination shall generally be held in the month of July.
- (5) The minimum marks required for passing the first and final year examination shall be fifty per cent. in theory and in practical (that include practical and viva- voce wherever applicable) separately in each subject as specified in marks distribution table of these regulations. No grace marks shall be admissible.
- (6) A student obtaining sixty-five per cent. and above marks shall be awarded first class in the subject and seventy-five per cent. and above marks shall be awarded distinction in the subject and these award shall not be applicable for supplementary examinations.
- 16. Scheme of the first year examination.-** (1) There shall be six theory papers, each of three hours duration and of hundred marks, followed by practical and *viva voce* examination.
- (2) The subjects for first year Master of Pharmacy (Ayurveda), Theory marks and Practical marks and viva marks are mentioned in table below, namely:-

Table

No.	Name of subjects for Master of Pharmacy (Ayurveda) - First year.	Theory Marks.	Practical and viva voce marks.
01	Rasashastra and Bhaishajya Kalpana-Pharmaceutics	100	100
02	Dravyaguna Vigyan- Materia Medica	100	100
03	Pharmacology and Toxicology of Ayurvedic drugs	100	100
04	Pharmaceutical Chemistry of Ayurvedic drugs	100	100
05	Pharmacognostic aspects of Ayurvedic drugs	100	100
06	Clinical and Therapeutic aspects of Ayurvedic drugs and Pharmacy Practice	100	--

- (3) The subjects for first year Master of Sciences (Medicinal Plants), Theory marks and Practical marks and viva marks are mentioned in table below, namely:-

Table

No.	Name of subjects for Master of Sciences (Medicinal Plants) - First year.	Theory Marks.	Practical and viva voce marks.
01	Dravyaguna Vigyan- Materia Medica	100	100
02	Medicinal Plants and Cultivation and	100	100

	Vriksha Ayurveda		
03	Phytochemistry	100	100
04	Botany and Pharmacognosy	100	100
05	Pharmacology and Toxicology	100	100
06	Plant Biochemistry and Microbiology	100 (50+50)	100

- (4) The syllabus for each paper of the specialties mentioned above shall be prescribed by the concerned department and approved by Academic body and shall be amended from time to time.
- (5) The student failing in one subject of first year shall be allowed to keep the terms of the final (second) year, provided the student shall not be allowed to appear in final (second) year examination unless the student passes all the subjects of first year examination.
- (6) The student failing in more than two subjects shall not be allowed to keep his or her term of the final (second) year.
- (7) The subsequent supplementary examination of first year shall be held every six months and maximum four trials (including the main examination) shall be given to pass the first year examination within a period of maximum of four years and the student shall not be allowed to continue the degree programme further in case of his or her inability to pass within the maximum limit.

17. Scheme of final (second) year examination.- (1) As a part of Post Graduate Degree programme, each scholar shall prepare a dissertation on the subject related to concerned specialty and syllabus in final (second) year.

- (2) All scholars who intend to appear in the final (second) year examination shall submit the dissertation on or before the date specified by the institute and its approval.
- (3) There shall be theory papers each of hundred marks and of three hours duration, followed by practical and viva voce examination of hundred marks.
- (4) The subjects for final (second) year Master of Pharmacy (Ayurveda) shall be as mentioned in the following table, namely:-

Table

No.	Name of subjects for Master of Pharmacy (Ayurveda) – final (second) year.	Theory Marks.	Practical and Viva voce marks.
01	Ayurvedic Pharmaceutics	100	--
02	Ayurvedic Materia Medica	100	--
03	Recent advances in Ayurvedic drug researches	100	
04	Research Methodology and statistics	100 (60+40)	--
05	For concerned specialty – Practical and Viva voce	--	100
06	For concerned specialty – Dissertation and Viva voce	--	100

- (5) The subjects for final (second) year Master of Sciences (Medicinal Plants) shall be as mentioned in the following table, namely:-

Table

No.	Name of subjects for Master of Sciences (Medicinal Plants)- final (second) year.	Theory Marks.	Practical and Viva voce marks.
01	Ayurvedic Drug Formulations	100	--
02	Medicinal Plants and Cultivation	100	--
03	Recent advances in Ayurvedic drug researches	100	--
04	Research Methodology and statistics	100 (60+40)	--
05	For concerned specialty – Practical and Viva voce	--	100
06	For concerned specialty – Dissertation and Viva voce	--	100

- (6) The syllabus for each paper of the specialties mentioned above shall be specified by the concerned department and approved by Academic body and shall be amended from time to time.
- (7) The subsequent supplementary examination for the failed students of final (second) year shall be held every six months.

- (8) Total duration of Post Graduate degree programme shall not exceed six years.
- 18. Conduct of examination.-** (1) At the time of theory and practical examinations, the examiners shall be appointed by the Director.
- (2) Examiner shall set three theory question paper of hundred marks each, for each specialty or subject and the practical or viva voce examination shall be conducted by the examiners who have set the theory paper.
- (3) In the examination, each theory question paper shall be of total hundred marks, consisting of two parts, namely, Part A and Part B.
- (4) There shall be two evaluations for an answer book by two different examiners so that lopsided nature in single evaluation and consequent unpleasant situation is mitigated.
- (5) After double evaluation, in case of variation of both the scores up to twenty per cent. of the total marks then the average of both the scores shall be considered as final score.
- (6) In case of fractional scores, if the fraction is 0.5 or above, it shall be rounded up to next highest digit and if the score is below 0.5 it shall be rounded up to the lower digit value.
- (7) At the end of double evaluation, if the variation between two independent scores is more than twenty per cent. of the total marks, then such answer books shall be considered for evaluation by third eligible examiner.
- (8) Among two separate examiners for evaluation of answer book, one examiner shall be external.
- (9) For practical examination, there shall be two examiners, one shall be external and one from internal for each specialty or subject.
- (10) The dissertation shall be send to two examiners, one from external and one from internal or Guide and on review of dissertation by examiners, the same examiners shall conduct both, the practical and *viva voce* and dissertation and viva voce examinations for final (second) year scholar.
- (11) A recognised Post Graduate teacher as mentioned in these regulations with five years total teaching experience out of which two years Post Graduate teaching experience in concerned subject shall be eligible to be appointed as examiner for the Post Graduate examination.
- (12) In case of unavailability of external examiner due to any cause at the time of examination, the Presiding Officer shall appoint the new examiner to conduct the examination with intimation to the Controller of Examination and the newly appointed examiner preferably shall be external and in case of unavailability of such examiner, internal senior faculty of concerned subject is to be appointed.
- 19. Dissertations.-** (1) As a part of Post Graduate degree programme, each scholar shall prepare a dissertation on the subject related to concerned specialty and the subject of every dissertation may be practical oriented, devoid of unpromising repetitions and shall be helpful in the development of science of Ayurveda.
- (2) Every scholar shall prepare synopsis of proposed research work for dissertation at the starting of final (second) and present before Departmental Research Committee for its approval.
- (3) The synopsis shall clearly mention the full title of the dissertation, need of the work, action plan of work, budget required for the work along with the name of the department and the name and designation of the Guide or Supervisor and Co-guide or Co-supervisor.
- (4) Every scholar shall present the progress report of the work duly signed and forwarded by the Guide or Supervisor to the Departmental Research Committee at the end of each term and the Departmental Research Committee shall assess and monitor the progress of the work and approve it accordingly and at the completion of research work, scholar shall present his or her research work in form presentation in seminar to be arranged by the Institute.
- (5) The dissertation shall place on record the methods and potentiality of the research carried out by the scholar on the problem selected by him and completed under the guidance of the Guide or Supervisor approved by the Institute.

- (6) The working for the dissertation shall be well utilised for learning to search the literature, its critical study and its practical application and dissertation shall consist of the scholar's own account of research.
 - (7) The dissertation shall consist of critical review of literature, methodology, results of the research, discussion on the basis of research findings of the study, summary, conclusion and references.
 - (8) The dissertation must be typed on both side of the paper of A4 size with a margin of one inch on either side and the typing shall be done in the font size of 12 with the fonts of Times New Roman with 1.5 line spacing and the title cover shall be in standard format as specified by the Institute and for Devanagari scripts Unicode fonts shall be used.
 - (9) No where in the dissertation or work, the photo of an individual be fixed as well as the work shall not be dedicated to anybody and the pattern of the title cover and the inner covers shall be as per the directives given by the Institute.
 - (10) The dissertation ordinarily shall not exceed two hundred and fifty typed pages including charts, diagrams, photographs, bibliography, and like.
 - (11) The dissertation shall contain at the end a summary of not more than one thousand and five hundred words covering the conclusion.
 - (12) The scholar shall have to submit the dissertation preferable two months before the final examination and not later than the last date fixed by the Institute.
 - (13) The dissertation shall contain the certificate duly signed by scholar, Guide or Supervisor and Co-guide or Co-supervisor stating that the work has been carried out and data has been collected by scholar himself under direct supervision of the Guide certifying that the works cited in present dissertation are duly acknowledged.
 - (14) Number of copies of the bound dissertation and summary along with soft copy with the certificate of Guide or Supervisor and Co-guide or Co-supervisor shall be submitted within the specified date, duly forwarded by the Head of the department as per the guideline decided by Institute from time to time.
 - (15) The dissertation shall be assessed by two adjudicators appointed by the institute, out of which one shall be external and one internal (Guide or Supervisor of the research work).
 - (16) The scholar shall be permitted to appear in the final (second) year examination of Post Graduate degree programme only after approval of the dissertation by the examiners.
 - (17) If the dissertation is not approved, it shall be returned to the scholar with the remarks of the adjudicators and the same shall be rectified by scholar during dissertation viva voce with detailed point to point clarification and if, same shall be not satisfy the examiners, that shall be reflected in the marks of dissertation.
 - (18) The dissertation, when approved, shall become the property of the Institute and any publication and Intellectual property rights relating to research work carried by scholar must mentioned the name of the Supervisor or Guide as one of the author with affiliation to this Institution and if is not implemented in any case, the institute may initiate the legal actions.
 - (19) Inter-disciplinary research may be done by co-opting the Co-guide or Co- supervisor from the concerned specialty.
 - (20) It is desirable that every scholar publish one research paper based on his current dissertation work in peer reviewed journal, at least indexed at University Grants Commission-Consortium for Academic Research and Ethics (UGC-CARE).
- 20. Guide or Supervisor.-** (1) A recognised Post Graduate Teacher as mentioned in regulation 21, of the concerned subject or specialty with one year Post Graduate teaching experience in the concerned specialty or subject shall be eligible for Guide or Supervisor.
- (2) Allotment of the scholars to the Guide or Supervisor shall be done on the basis of a roster prepared by the Institute in consultation with Departmental Research Committee and Dean (Academic) and availability of the seats under concerned Guide or Supervisor and maximum three scholars every year under each Guide or Supervisor.
 - (3) When the numbers of guides proportionately are less, then considering merit and designation of the faculty member, extra scholars may also be registered.

- (4) In case of retirement of Guide before the completion of the dissertation, the next eligible Co-guide or Co-supervisor or teacher of the concerned subject or department shall take responsibility of the Guide, after getting due permission from the Director.
- (5) If a guide of any scholar is retired or resign from the post due to any reason and the research work under his or her guidance been completed and the same has been certified by the Head of Department and thereafter the Director is empowered to allow the submission of dissertation under the same Guide or Supervisor.
- (6) In case of unavailability of eligible Guide or Supervisor as mentioned in sub-regulation (1) in any specialty, the Director of the Institute is empowered to relax the criteria for eligibility as Guide or Supervisor as an interim measure.
- 21. Recognition as Post Graduate Teacher.-** Faculty of the Institute having following qualifications and experience shall be recognised as Post Graduate teacher namely:-
 - (a) Post Graduate degree in concerned subject or specialty; and
 - (b) minimum three years of Post Graduate teaching or research experience after Post Graduate degree or minimum five years Under Graduate teaching experience after Post Graduate degree; or
 - (c) a faculty having minimum five years research or industrial experience with Post Graduate degree in Ayurveda or any other basic science may be recognised as visiting Post Graduate teacher of the institute for the concerned subject or specialty.
- 22. Vacations and Leave.-**
 - (1) Two vacations of fifteen days each shall be allowed to the scholars during winter and summer seasons as decided by the authority of the institute and no any kind of leave can be attached with vacation: provided that the Director shall have power to sanction extra leave in extra ordinary circumstances.
 - (2) The duty or special leave shall be granted to the scholars who are deputed or allowed by the authority to take part in the sports, seminar, study tour and such leave shall not exceed fifteen days in a year; however, the leave may be extended maximum up to fifteen days in special case by the Director.
 - (3) The scholars shall also be allowed fifteen days medical leave in a year on submission of medical certificate of a registered medical practitioner, this leave cannot be carry forwarded to the next academic year.
 - (4) Under special circumstances, the scholar shall be allowed to avail medical leave up to the maximum sixty days under medical ground with the valid medical certificate issued by the registered medical practitioner.
 - (5) For the scholars admitted on stipendiary seats shall abide to the provisions mentioned under sub-regulations (1) to (4) of regulation 22 along with the following, namely:-
 - (a) the scholars shall be allowed casual leave up to ten days each year and such leave may be joined with the holidays or Sundays and the scholars may avail such leave maximum up to ten days at a time including holidays;
 - (b) in between holidays, a holidays shall be considered as holidays; and
 - (c) the casual leave cannot be joined with vacation and medical leave, and such leave cannot be carry forwarded to the next academic year.
 - (6) Where eligible, maternity or Child care leave shall be given to the scholars as per the Maternity Benefit Act, 1961 (53 of 1961), however after joining, such scholars have to complete the study period as specified in sub-regulation (1) of regulation 13.
 - (7) The leave mentioned in sub-regulation (6) shall be allowed once during the period of study on production of substantial document and no any kind of leave shall be attached with this leave.
 - (8) The Director has power to sanction up to thirty days leave in extra ordinary circumstances and no stipend shall be paid for such kind of leave which is sanctioned in extra ordinary circumstances.
 - (9) No stipend shall be paid for such kind of leave which is sanctioned in extra ordinary circumstances.
 - (10) Any unreasonable leave or absence availed by stipendiary or non-stipendiary scholars without the previous approval of the Dean (Academics) or in excess of limit mentioned above shall be treated as willful absence and no stipend shall be granted for such period, and may invite disciplinary action which may include termination of the candidature and recovery of the stipend paid by the institute.
 - (11) The authority reserves the right to cancel the leave including vacation without any explanation.

- 23. Control of unfair means and disorderly conduct.-** (1) No student shall use unfair means or indulge in disorderly conduct at, or in connection with the examination and doing so shall be considered as on punishable offence depending upon the nature and gravity of the offence as per the provision of examination of the Institute.
- (2) On receipt of a report or on detection of a case regarding the misconduct of any student at any examination or tests, the Examination Disciplinary Action Committee appointed by the Director shall have the power to punish the student after following the procedures as laid down therein and any one or more of the following punishment may be awarded by the committee to the student where a charge of misconduct at an examination is held proved against the candidate, namely:-
- cancelling or rejecting his admission to an examination and forfeiting fees if any, paid by him;
 - cancelling his result of the examination with which the charge is connected;
 - debaring him for a specific period which may be five years or more or permanently from joining any programme of the institute;
- (3) The schedule below provides punishment in column (3) or unfair means or acts mentioned in column (2) of said schedule.

SCHEDULE:

Sr. No.	Unfair Means or Acts.	Punishment.
(1)	(2)	(3)
(1)	Writing questions or answers or anything on any material other than answer book inside the examination hall.	Cancelling the result of respective subject
(2)	Possession of material(s) relevant to the subject of the examination in examination hall namely:- (a) papers, books or notes; or (b) written notes on any part of the clothes worn by the student or on any part of his or her body, or table or desk; or (c) foot-rule or instruments like set-squares, protractors, slide rulers, etc. with notes written on them.	Disqualification from appearing in examinations for two exams
(3)	Copying is found or established from answer-book or it is otherwise established that the student has, (a) copied or taken help from any papers, books, notes, answer-book or any other sources in any manner during the examination or at any time thereafter; or (b) allowed another student to copy from his or her answer-book; or (c) received help from or has helped another student; or (d) exchanged his or her answer-book or part thereof with another student.	Disqualification from appearing in examinations for two exams
(4)	On passing or attempting to pass on the question paper (or part thereof) outside	Disqualification from appearing in examinations for two exams
(5)	Destruction of incriminating material(s) by swallowing, running away with it or causing its disappearance or by any other means.	Disqualification from appearing in examinations for three exams
(6)	Smuggling in or out of an answer-book or replacing or getting it replaced after attempting answers (during or after the examination with or without the help or connivance of any person).	Disqualification from appearing in examinations for three exams
(7)	Non delivery of answer-book to the supervisor or destroying the answer book.	Disqualification from appearing in examinations for two exams
(8)	Serious misconduct in the examination hall or misbehavior with staff or using force with the staff appointed on exam	Disqualification from appearing in examinations for two

	duty inside or outside the examination hall.	exams
(9)	Disobedience, change of seat, misbehavior in or around examination hall or writing another student's seat number on the answer-book.	Disqualification from appearing in examinations for one exam
(10)	Approaching examiner for raising marks or for writing the answer on blank pages.	Disqualification from appearing in examinations for three exams
(11)	Impersonation—impersonator (who writes for another student), if is a student of this institute as well as impersonated student.	Permanently debarring the student from Institute
(12)	When answer-book contains, (a) abusive or obscene or threatening language; or (b) appeal to the examiner; or (c) distinctive mark or sign to disclose the identity.	Cancelling the result of respective subject
(13)	Admission to the examination on any kind of false representation in the application form.	Disqualification from appearing in examinations for one exam
(14)	If the student is found talking or doing any other malpractice in the video footage or keeping mobilephone or any other electronic gadgets in the examination hall.	Disqualification from appearing in examinations for one exams

- (4) Any unfair means or acts in any examination is held proved against the candidate, which are not mentioned in sub-regulation (3), the Examination Disciplinary Action Committee appointed by the Director shall have the power to decide the punishment as per the case of unfair means or acts by the student.

24. Award of the Degree.- The scholars who have completed the degree programme and have been declared successful in the final (second) year examination shall be awarded the degree of,-

- (a) Master of Pharmacy (Ayurveda);
- (b) Master of Sciences (Medicinal Plants);

in specialty concerned, on payment of necessary fees, either in person or in absentia at his option at the succeeding convocation of the institute.

25. Fees.- The fees as decided by the Governing Body of the Institute from time to time shall be charged from the scholars as may be applicable to them and the degree holders of the Institute shall be exempted from paying the enrolment fees.

26. Miscellaneous.- The scholars undergoing Post Graduate degree programme shall not be permitted to undertake any paid or unpaid appointments or service or work or engage himself in self-employment and the scholar shall be directed to obtain 'No Objection Certificate' from the Institute while, submitting an application for any new job or appointments and the defaulters are liable for disciplinary actions such as recovery of stipend, in case of stipendiary seats and termination of admission.

27. Discretionary powers of authority.- The Director of the Institute has the final authority for any discrepancy in the interpretation of provisions of these regulations, and for reasons to be recorded in writing, may relax any provisions of these regulations with the approval or ratification of the Governing Body of Institute.

Dr. ANUP THAKAR, Director
[ADVT.-III/4/Exty./811/2023-24]

Annexure

[See regulation 12]

BOND TO BE EXECUTED BY A SCHOLAR OF M. PHARM (AYURVEDA)

(Only for the students who are admitted on stipendiary seats)

Post Graduate programme of the Institute of Teaching and Research in Ayurveda for monthly stipend to be received by her/him

This Bond made on the..... day ofat (Jamnagar) bystudent of the First year M. Pharm (Ayurveda)the Post Graduate programme of the Institute of Teaching and Research in Ayurveda here in a after called the student of first part andson/daughter of Shri (first surety) here in after called collectively referred to as the sureties of the second part on favour of the Institute of Teaching and Research in Ayurveda, Jamnagar.

Whereas the student when admitted to the two years Post Graduate Pharmacy degree programme will be getting a stipend of ₹..... per month in the first year and ₹..... per month in the second year of his / her training in this institution, and whereas the Institute of Teaching and Research in Ayurveda has agreed to award the same on terms here in after security for due performance by the student for the said terms.

Now this bond witnesses as follows:-

1. In pursuance of the said agreement and in consideration of Institute of Teaching and Research in Ayurveda giving to the students a stipend of ₹.....per month for the first year and ₹.....per month in the second year of the Post Graduate student during the programme of the training as aforesaid, the student hereby convenience with the Institute of Teaching and Research in Ayurveda that he / she shall carry on with his / her studies in the Post Graduate Pharmacy degree programme and complete the degree programme after appearing at all the examinations as required under the rules.
2. After commencement of the said degree programme for a period of two years (successfully) that, I hereby agree and abide by that I will serve the institution or any other institutions ordered and directed to me by Institute of Teaching and Research in Ayurveda for a period of two years and if I breach of this condition on committing default in serving the Institution than I hereby agree and undertake that in case of a default on my part I shall be liable to refund in total emoluments of the said Post Graduate degree programme drawn by me for a period of two years and I shall liable to pay all the expenses incurred for me by the institution.
3. In the pursuance of the said agreement, that if the said scholar while in institution shall duly and faithfully devote to and execute, perform and discharge all the duties without causing and inquiry loss or damage by reason of any act, default, negligence, or error in judgments to the Institution.
4. In pursuance of the said agreement and for consideration aforesaid the student and sureties hereby agree that if the student would fail to complete the degree programme in accordance with the covenant in that behalf contain or in clause (1) above or shall discontinue his / her studies for any reason what so ever the student and sureties shall jointly and separately liable to pay to the Institute of Teaching and Research in Ayurveda, the total amount of fellowship paid by the Institute of Teaching and Research in Ayurveda and received by the scholar as aforesaid.

Student and sureties are hereby further agreed that if the student leaves the institute without any sufficient reason within 2 (two) months of the admission or due to any reason after 2 (two) months of the Admission, then he / she to pay Rs. 2,00,000/- (Rs. Two Lakhs only) to the Institute, In advance to get back his / her original certificates / mark sheets.

In witness whereof this bond has been signed by the student and sureties on the day, months of year in above mentioned.

Signed by the student:

Address:

1. Witness:
2. Witness:

Singed by the First Surety:

Address:

1. Witness:
2. Witness:

Singed by the Second Surety:

Address:

1. Witness:
2. Witness:

Before me